ISSN 2394-8485

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

मासिक

गुरमत ज्ञान

कार्तिक-मार्गशीर्ष, संवत् नानकशाही 552
वर्ष 14 अंक 3 नवंबर 2020

मुख्य संपादक : सिमरजीत सिंघ
संपादक : सतविंदर सिंघ
सहायक संपादक : जगजीत सिंघ

चंदा	
सालाना (देश)	10 रुपये
आजीवन (देश)	100 रुपये
सालाना (विदेश)	250 रुपये
प्रति कापी	3 रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर साहिब- 143006
फोन : 0183-2553956-60
एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग 303 संपादकीय विभाग 304
फैक्स : 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

विषय-सूची

गुरबाणी विचार 4
संपादकीय 5
श्री गुरु नानक देव जी का उपदेश 7
-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'
पथ-प्रदर्शक श्री गुरु नानक देव जी 13
-डॉ. परमजीत कौर
महान आध्यात्मिक चिंतक - श्री गुरु रामदास जी 19
-डॉ. राजेंद्र सिंघ साहिल
भक्त नामदेव जी की विचारधारा 21
-डॉ. परमजीत कौर
शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की पृष्ठ भूमि 25
-डा. परमवीर सिंघ
धर्म प्रचार की प्रमुख संस्था . . . 34
-डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ
शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के १०० वर्षीय . . . 40
- डॉ. अमरजीत कौर इब्बण कलाँ
सिध गोसटि : विचार व्याख्या 43
-डॉ. मनजीत कौर
खबरनामा 47

गुरबाणी विचार

मंघिरि माहि सोहंदीआ हरि पिर संगि बैठड़ीआह ॥
तिन की सोभा किआ गणी जि साहिबि मेलड़ीआह ॥
तनु मनु मउलिआ राम सिउ संगि साध सहेलड़ीआह ॥
साध जना ते बाहरी से रहनि इकेलड़ीआह ॥
तिन दुखु न कबहू उतरै से जम कै वसि पड़ीआह ॥
जिनी राविआ प्रभु आपणा से दिसनि नित खड़ीआह ॥
रतन जवेहर लाल हरि कंठि तिना जड़ीआह ॥
नानक बांछै धूड़ि तिन प्रभ सरणी दरि पड़ीआह ॥
मंघिरि प्रभु आराधणा बहुड़ि न जनमड़ीआह ॥१०॥ *(पन्ना १३५)*

पंचम गुरु श्री गुरु अरजन देव जी महाराज बारह माहा मांझ की इस पावन पउड़ी में मार्गशीर्ष महीने में ऋतु और वातावरण के विशेष प्रसंग में जीव-स्त्री को पति-परमेश्वर प्रभु के नाम के साथ जुड़ कर मानव-जीवन सफल करने के लिए मार्ग दर्शाते हैं।

सतिगुरु जी फरमान करते हैं कि मार्गशीर्ष महीने की ठंडी-मीठी ऋतु में जो जीव-स्त्रियां प्रिय पति-परमेश्वर के संग बैठी होती हैं, जिनको स्वामी मालिक ने अपने साथ मिला लिया होता है, उनकी प्रशंसा मैं क्या बयान करूं? उनकी प्रशंसा वर्णन से बाहर है। उनका तन और मन अथवा उनका समूचा अस्तित्व ही परमात्मा के साथ, अच्छे सतसंगियों के साथ से उल्लासमयी हो जाता है, लेकिन जो अच्छे जनों की संगत से बाहर रहती हैं वे जीव-स्त्रियां अकेली पड़ जाती हैं अर्थात् मालिक के प्यार से वंचित रह जाती हैं। उनके सांसारिक दुख कभी निवृत्त नहीं होते, बल्कि वे यमों के वश पड़ जाती हैं।

गुरु जी पुनः नेक जीव-स्त्रियों का उल्लेख करते हुए फरमान करते हैं कि जिन जीव-स्त्रियों ने मार्गशीर्ष महीने की ठंडी-मीठी ऋतु में अपने पति-परमेश्वर को स्मरण किया वे सदैव सचेत होती हैं अर्थात् सांसारिक दुख मन पर भारी नहीं होने देती। उन्हीं जीव-स्त्रियों के गले में गुण रूपी रत्न, जवाहर, लाल शोभा दे रहे होते हैं।

सतिगुरु जी का कथन है कि मैं तो ऐसे नेक जनों की चरन धूलि चाहता हूं जो प्रभु के द्वार, उसकी शरण में आ गए हैं। मार्गशीर्ष महीने में यदि मालिक की सच्ची आराधना की हो तो जीव को बार-बार जन्म नहीं लेना पड़ता। उसका जन्म-मरण का दुख कट जाता है।

संपादकीय

सिक्ख पंथ की सिरमौर संस्था : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी

सिक्खों की असंख्य कुर्बानियों के बाद १५ नवंबर, १९२० ई. को अस्तित्व में आई सिक्ख पंथ की सिरमौर संस्था शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी नानक निर्मल पंथ के रूहानी मिशन को आगे चलाने के लिए निरंतर वचनबद्ध और यत्नशील रही है। यह गुरमति सिद्धांतों और सिक्ख अधिकारों की पहरेदार है। हम शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के कार्यों को गुरु साहिबान के रूहानी मिशन की निरंतरता में देखने का यत्न करेंगे।

नानक निर्मल पंथ के मानवतावादी, परोपकारी और रूहानी मिशन की राह में दरपेश चुनौतियों का सामना करते हुए श्री गुरु अरजन देव जी और श्री गुरु तेग़ बहादर जी ने शहादत दी। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने पूरा परिवार कुर्बान कर दिया। गुरु साहिबान के बाद नानक निर्मल पंथ के इस मिशन को आगे बढ़ाते हुए बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने खालसा राज कायम किया और असंख्य सिंघ-सिघनियों सहित शहादत दी। फिर लम्बा समय सिंघों ने दल खालसा, बुड्ढा दल, तरुना दल और सिक्ख मिसलों के रूप में कठिन समय में, घल्लूघारों में असंख्य शहादतें देकर इस मिशन को चढ़दी कला में रखा। फिर महाराजा रणजीत सिंघ ने गुरु साहिबान के आशय वाले सर्वसाझे और सर्वकल्याणकारी खालसा राज की स्थापना की। महाराजा रणजीत सिंघ के अकाल प्रस्थान कर जाने के बाद अंग्रेज़ राज के समय जब महंतों द्वारा गुरुद्वारा साहिबान का अपमान किया जाने लगा तो गुरुद्वारा साहिब को महंतों के कब्ज़े में से छुड़ा कर संगती प्रबंध में लाने के लिए असंख्य शहादतों के बाद शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, अस्तित्व में आई और इसका मुख्यालय श्री अमृतसर में बना। इस संसार में सबसे अधिक पवित्र यदि कोई संस्था है तो वह शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी है, जिसकी बुनियाद को असंख्य सिंघ- सिघंनियों, बच्चों, बुज़ुर्गों, माताओं और यहां तक कि गोद में पल रहे बच्चों ने भी अपने ख़ून से पक्का किया है।

गुरु साहिबान द्वारा दिखाए नक्श-ए-कदमों पर चलते हुए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी सिक्खी के प्रचार-प्रसार, गुरुद्वारा साहिबान के प्रबंध, सिक्ख रहित मर्यादा, गुरमति सिद्धांतों की पहरेदारी, सिक्ख मसलों की पैरवी, विद्या के प्रसार और मानवतावादी परोपकारी कामों के लिए निरंतर वचनबद्ध व यत्नशील है। देश-विदेश में बैठे हर एक आस्थावान सिक्ख के मन में इस संस्था के प्रति अति श्रद्धा और सम्मान है। हर एक गुरसिक्ख इस बात से भली-भांति अवगत है कि संसार

भर में बसते किसी सिक्ख को काँटा भी चुभे तो शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी उसकी पीड़ा महसूस करती है। दुनिया भर में बसता हर एक सिक्ख राष्ट्रीय स्तर पर पैदा होती किसी भी मुश्किल की घड़ी में अपने पीछे एक बड़े परिवार— शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी को खड़ा महसूस करता है। इस संस्था के अस्तित्व के कारण राष्ट्रीय स्तर पर अपने अधिकारों की रक्षा के लिए जो सहारा सिक्खों के पास है वह किसी अन्य के पास नहीं। हर एक सिक्ख को इस संस्था पर गर्व है। हज़ारों सिक्ख परिवारों का रोज़गार इस संस्था के माध्यम से चल रहा है। इस संस्था में बहुत-से सदस्य साहिबान और कर्मचारी शहीदों के परिवार में से हैं, बहुत-से धर्मी फौजियों के परिवार में से हैं। बहुत-से भले पुरुष श्री गुरु रामदास जी के भय व भावना में रहने वाले नाम-रसिए भी हैं। इतने बड़े प्रबंध में कहीं कोई लापरवाही हो जाना स्वाभाविक है। जो पदाधिकारी, कर्मचारी आज हैं, वे कल को नहीं होंगे, परन्तु यह संस्था शाश्वत है, पंथ की अमानत है, सिक्खों की अपनी है और उन्हें अपना समझने वाली है।

पंथक भलाई की पहरेदार होने के कारण कुछ पंथ-विरोधी ताकतें सिक्खों के मन में इस संस्था के प्रति सम्मान और विश्वास कम करने की कोशिश में भी लगी हुई हैं। प्रत्येक गुरसिक्खों को यह समझना चाहिए कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी पंथक शक्ति का आधार है। यह सिक्खों की वैधानिक ताकत हैं। कुछ लोगों के मन में इसके प्रति पनप रहा अविश्वास पंथक हित में नहीं। नवंबर महीने शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का सौ वर्षीय स्थापना दिवस मनाया जा रहा है। हमें इसकी चढ़दी कला के लिए अरदास करनी चाहिए।

'गुरमति प्रकाश' पंजाबी मासिक का नवंबर अंक शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सौ वर्षीय स्थापना दिवस को समर्पित विशेषांक रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। इसी तरह 'गुरमत ज्ञान' के इस अंक में भी अन्य आलेखों के अलावा शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की पृष्ठभूमि, कार्य-क्षेत्र तथा धर्म प्रचार-क्षेत्र में योगदान को प्रदर्शित करने वाले तीन आलेख प्रकाशित किए जा रहे हैं। आशा है कि पाठक-जन इन आलेखों को पढ़ कर इस महान संस्था की ख्याति को और अधिक बढ़ाने में भूमिका अदा करेंगे।

—सतविंदर सिंघ फूलपुर
फोन : 99144-19484

श्री गुरु नानक देव जी का उपदेश

*-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'**

जगत-गुरु श्री गुरु नानक देव जी द्वारा दी गई शिक्षाएं और दिए गए उपदेश इस जगत् को लासानी आगवानी देते हैं। उनके द्वारा उठाया गया प्रत्येक पवित्र कदम ऐतिहासिक परिवर्तन लाने वाला तथा विश्व की संपूर्ण मानवीयता की तकदीर बदलने वाला सिद्ध हुआ। प्रभु अर्थात् वाहिगुरु के संबंध में संसार को दिया गया, बख्शिश किया गया उनका फलसफा सचमुच बहुत महान् व अद्भुत है। प्रसिद्ध इतिहासकार मैलकम अपनी पुस्तक 'Sikh's Sketch' में एक स्थान पर लिखता है— ''श्री गुरु नानक देव जी ने समझ तथा स्नेह से लोगों की दशा बदल दी। श्री गुरु नानक देव जी लोगों के मन में वाहिगुरु की भक्ति और आपसी प्यार उपजाना चाहते थे। इस उत्तम कार्य को संपूर्ण करने हेतु उन्हें कई विरोधी शक्तियों के साथ लड़ना अर्थात् जूझना पड़ा। श्री गुरु नानक देव जी ने सूझ (तर्क) तथा स्नेह के साथ सभी ताकतों पर विजय प्राप्त की।''

एक और इतिहासकार सी. एच. पेने का कहना है— ''श्री गुरु नानक देव जी ने वह बात समझ ली थी, जो अन्य सुधारकों ने नहीं समझी थी कि धर्म वही जिंदा रह सकता है जो सद्व्यवहार करना सिखलाए, न कि यह कि दुनिया से पलायन कैसे करना है, बल्कि यह सिखलाए कि दुनिया में रहना किस तरह है।''

इसी संदर्भ में कनिंघम ने उचित ही लिखा है कि ''यह केवल श्री गुरु नानक देव जी के हिस्से आया था कि वे सुधार के असली सिद्धांतों का प्रचार करें। उनके द्वारा रखी गई आधारशिला ने ही श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को इस योग्य बनाया कि वे अपने देशवासियों के मन में बुराइयों के विरुद्ध ज्वाला भड़का सकें तथा इस विचार को कि छोटे, बड़े . . . सभी मनुष्य राजनीतिक एवं धार्मिक तौर पर एक हैं, इसे वास्तविक रूप दे सकें।''

कनिंघम का एक और कथन काबिले-गौर है कि श्री गुरु नानक देव जी ने अपने सिक्खों को उन कुप्रथाओं से बचा लिया, जिनसे भारतवासी सदियों से शिकार होते आ रहे थे। गुरु साहिब ने सिक्खों को एक अकाल पुरख की उपासना करने तथा पवित्र आचरण धारण करने की शिक्षा दी। इस तरह वे अपने सरल, स्पष्ट, स्वतंत्र, सहज, अद्भुत दर्शन द्वारा अति सुंदर पंथ सृजित कर गए, फोकट के रीति-रिवाज़ों की जकड़न से इस समाज को मुक्त कर गए।''

श्री गुरु नानक देव जी के उपदेशों को इस प्रकार वर्णित करने की कोशिश की गई है :—

परमात्मा का स्वरूप : श्री गुरु ग्रंथ साहिब का आरंभ 'ੴ' से होता है। वह सभी शक्तियों का स्वामी है। वह मौजूद है तथा हमेशा मौजूद रहेगा। उसके मुकाबले कोई दूसरा नहीं। उसके पास सभी शक्तियां हैं।

**बी-एक्स-९२५, संतोखपुरा, हुशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००४; फोन : ९८७२२-५४९९०*

श्री गुरु नानक देव जी ने वाहिगुरु के संबंध में अपना अनुभव वर्णित किया है। उन्होंने बताया कि परमात्मा एक है, निरंतर है, सत्य है। वह समस्त गुणों का समूह है, सृजक है और सभी शक्तियों का प्रतीक है। उस पर कोई सांसारिक मर्यादा लागू नहीं होती। वह निर्भय है, दयालु है। वह समय की बंदिश में नहीं है। उसकी ज्योति का प्रकाश हर किसी में देखा जा सकता है। वह जन्म-मरण से रहित है। श्री गुरु नानक देव जी हम पर कृपा करते हुए फरमाते हैं :

अलख अपार अगंम अगोचर
ना तिसु कालु न करमा ॥
जाति अजाति अजोनी संभउ
ना तिसु भाउ न भरमा ॥१ ॥
साचे सचिआर विटहु कुरबाणु ॥
ना तिसु रूप वरनु नही रेखिआ
साचै सबदि नीसाणु ॥ *(पन्ना ५९७)*

साधसंगत का महत्व : मानवीय जीवन वाहिगुरु को पाने का साधन है, रास्ता है। श्री गुरु नानक देव जी से पहले प्रभु को पाने के दो रास्ते प्रचलित थे। एक कर्म (योग) का कठिन रास्ता और दूसरा— पाठ या ज्ञान का। कर्म तथा ज्ञान के रास्ते टेढ़े-मेढ़े, ऊबड़-खाबड़ थे। पहले रास्ते को अपनाने वाले कई योगी व तपस्वी विकारों की एक चोट भी सहन न कर सके और भटक गए। दूसरे रास्ते (ज्ञान मार्ग) पर चलने वाले विचारों के मंझधार में फंसे रहे। वे पार नहीं उतर सके। प्राय: ज्ञान अहंकार व दंभ पैदा करने का कारण भी बनता है। अहंकार, विकार, दंभ, घमंड वगैरह प्रभु-मिलन के रास्ते में रुकावटें खड़ी करते हैं। प्रचलित इन दोनों रास्तों से अलग एवं सर्वोत्तम तीसरा रास्ता श्री गुरु नानक देव जी ने सुझाया। उन्होंने भवसागर से पार उतरने के लिए साधसंगत का सेतु निर्मित कर दिया। गुरु जी ने सामूहिक रूप में भक्ति करने का ढंग बतलाया। कीर्तन करना व सुनना और है क्या? अदब तथा श्रद्धा के साथ गुरबाणी को पढ़ना व सुनना यही तो है साधसंगत, सामूहित भक्ति। उन्होंने लोगों में व्यक्तिगत भाव को मिटाकर उनमें सामूहिक भाव पैदा कर दिया। साधसंगत के इस महान् दर्शन की बदौलत आगे जाकर पंथ का सृजन हुआ। इस संबंध में इतिहासकार मुहसिन फानी लिखता है कि श्री गुरु नानक देव जी का महान काम 'संगत' को कायम करना था। हिंदोस्तान में कई प्रकार की संगतें बन गई थीं— पक्की, हुजूरी, बड़ी, करतारी आदि। उनकी तीसरी व अंतिम उदासी (यात्रा) के अंत में सिधों ने उनसे पूछा था, ''आप पंथ का महल किस चीज़ पर निर्मित करना चाहते हैं?'' श्री गुरु नानक देव जी ने उत्तर देते हुए फरमान किया— *''संगत व बाणी के धरातल पर।''*

अकेला चलना तथा जूझना आसान है, किंतु किसी अन्य को साथ लेकर चलना हो तो जोर बेशक कम लगता है, मगर सावधानी की जरूरत बढ़ जाती है। दो काम एक साथ करने पड़ते हैं— स्वयं को चलाए रखना तथा दूसरे को साथ लेकर चलना।

संगत पर ज़ोर देने का यह भी एक कारण था कि सिक्ख स्वांग (भेष), वर्ण और जाति-भाव से ऊंचा उठ जाए। इस आशय की संपूर्णता 'खालसा पंथ' का सृजन था। इस तरह संगत का महत्त्व सिक्खी के घर में श्री गुरु नानक देव जी ने उजागर किया। इस संबंध में भाई गुरदास जी ने लिखा है :

धरमसाल करतारपुरु साधसंगति सचखंडु वसाइआ।
वाहिगुरू गुर सबदु सुणाइआ ॥ *(वार २४:१)*

गुरु की आवश्यकता : मूल-मंत्र के अंत में 'गुर

प्रसादि' अंकित है। इसका भावार्थ है — गुरु की कृपा। सारी समझ गुरु से ही मिलती है और जब गुरु प्राप्त हो जाता है, तब भटकन समाप्त हो जाती है। इसे 'प्रसादि' कहा है। श्री गुरु नानक देव जी के अनुसार मानव-जन्म का मंतव्य वाहिगुरु की प्राप्ति है और इसके लिए दो चीजों की जरूरत है— एक वाहिगुरु की बख्शिश तथा दूसरा— गुरु।

श्री गुरु नानक देव जी का अति सुंदर कथन है कि अगर कोई अगुआ अंधा मिल जाए तो वह स्वयं तो डूबेगा ही साथ साथियों को भी ले डूबेगा।

श्री गुरु नानक देव जी ने यह स्पष्ट कर दिया कि जो कर्म जीव ने यहां पर किए हैं, उनका फल उसे अवश्य मिलेगा। भटके हुए व्यक्ति को गुरु ठीक रास्ता बता सकता है, बदी से हटाकर उसे सच्चाई के पथ पर आगे बढ़ा सकता है और शुभ कर्म करने का ढंग बता सकता है।

गुरु (सोये) मन को जगाकर जिज्ञासु को सच्चाई, कुर्बानी और भक्ति के मार्ग पर चलना सिखाता है। उसकी जिज्ञासा को शांत करता है। दिव्य तृप्ति का एहसास करवाता है। उसे वाहिगुरु के दिव्य स्वाद को चखना सिखाता है। प्रभु के साथ अभेद होने की युक्ति सुझाता है। गुरु देह न होकर शबद है। शबद ही गुरु है। श्री गुरु नानक देव जी का पावन फरमान है— *''सबदु गुरू सुरति धुनि चेला॥''*

श्री गुरु ग्रंथ साहिब हमारी आगवानी करते हुए पावन संदेश देते हैं कि *''सतिगुर ते खाली को नही मेरै प्रभि मेलि मिलाए॥''* वह शरीर में नहीं आता, बल्कि सदा कायम है :

सतिगुरु मेरा सदा सदा ना आवै न जाइ॥
ओहु अबिनासी पुरखु है सभ महि रहिआ समाइ॥
(पन्ना ७५९)

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने भी सिक्खों को हिदायत देते हुए फरमाया था— *''पूजा अकाल की, पर्चा शबद का, दीदार खालसे का।''*

एकता एवं सद्भावना : जब श्री गुरु नानक देव जी का आगमन हुआ तब अलग-अलग समुदाय द्वेष, ईर्ष्या से ग्रस्त होकर एक-दूसरे से घोर घृणा करते थे। उनमें न तो एकता थी और न ही सद्भावना। यदि एक समुदाय दूसरे समुदाय को मलेच्छ कहता था, तो दूसरा उसे काफिर कहकर दुत्कारता था। उनमें सद्भावना पैदा करने का गुरु जी ने यत्न आरंभ कर दिया। उन्होंने इस हेतु सहनशीलता व संतोष का प्रचार किया। उन्होंने सभी मनुष्यों की एकता पर ज़ोर दिया— *''सभ महि जोति जोति है सोइ॥''* वे जहां प्रभु की आरती *''गगन मै थालु रवि चंदु दीपक''* कह कर उतारते हैं, वहीं *''सहस तव नैन नन नैन हहि तोहि कउ''* फरमान कर सभी जीवों की एकता को भी प्रकट करते हैं। वे इस बात को फकड़ (गाली) के तुल्य समझते हैं कि मनुष्यों में भी ऊंच-नीच की भावना हो सकती है। सब पर प्रभु की कृपा-दृष्टि की छाया है। सभी में उसका नूर समाया हुआ है और उसी के नूर से संपूर्ण जगत् बना है। जब प्रभु की लीला को समझने में चूक हो जाती है, तब विभिन्न समुदायों में वैमनस्य, भेदभाव पैदा हो जाता है। यहां पर भी श्री गुरु नानक देव जी हमारा मार्गदर्शन करते हैं— *''राह दोवै खसमु एको जाणु॥''* फिर हम पर कृपा करते हुए फरमाते हैं :

अलाहु अलखु अगंमु कादरु करणहारु करीमु॥
सभ दुनी आवण जावणी मुकामु एकु रहीमु॥
(पन्ना ६४)

श्री गुरु नानक देव जी द्वारा लोगों में एकता तथा सद्भावना पैदा करने हेतु जो मेहनत की गई, उस

संबंध में भाई गुरदास जी लिखते हैं :

चारि वरन इक वरन होइ
साधसंगति मिलि होइ तराबा। (वार २४:४)

तात्पर्य यह कि गुरु जी ने भिन्न-भिन्न धर्म के लोगों को एक जगह बैठने का, इकट्ठा होने का ढंग बतलाया। ब्राह्मण को ब्रह्म पहचानने, योगी को युक्ति समझने और मुसलमान को इसलाम के मूल उद्देश्य जानने हेतु प्रेरित किया। जहां भी कोई है, वह वहीं रहकर परम पद पा सकता है। एक-दूसरे की निंदा करने से मनमुटाव, भेदभाव बढ़ता है।

जात-पांत कुप्रथा पर चोट : कई सदियों तक भारतीय समाज जात-पांत कुप्रथा का शिकार रहा है। जात-पांत के नाम पर तथाकथित ऊंचे वर्ग के लोग तथाकथित नीची जाति के लोगों का सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, मानसिक और शारीरिक शोषण करते रहे हैं। हमारे समाज को छुआ-छूत का रोग भयानक रोग की तरह चिपका हुआ था। पहली बार श्री गुरु नानक देव जी ने इस रोग की पहचान कर इसका इलाज एक दक्ष वैद्य की तरह किया। उन्होंने अपनी मधुर बाणी और मीठे वचनों द्वारा लोगों को समझाया कि परमात्मा की नजर में सभी जन एक समान हैं। जात-पांत कुछ नहीं होती। प्रभु की दरगाह में केवल सच स्वीकार है।

इतिहासकार व विद्वान सर चार्ल्स गफ का कथन है कि हिंदुओं के मूल सिद्धांतों में जाति-वर्ग का बोलबाला है। जात-पांत के इस बंधन ने मानव की प्रगति रोक दी थी। इस बात को श्री गुरु नानक देव जी ने समझा। उन्होंने देखा कि आत्मिक उन्नति, धार्मिक सुधार तथा समाज की प्रगति तब तक नहीं हो सकती, जब तक जात-पांत के नाम पर बांटने वाली व्यवस्था कायम है। गुरु जी ने इसकी आलोचना की और सभी मनुष्यों को प्रभु की नज़र में एक जैसा बताया। अच्छे काम करने वाला ही ऊंचा है। बुरे काम करने वाला, धर्म तथा वाहिगुरु की निगाह में नीच है। गुरु जी का पावन फरमान है :

जाति जनमु नह पूछीऐ सच घरु लेहु बताइ ॥
सा जाति सा पति है जेहे करम कमाइ ॥

(पन्ना १३३०)

फ्रैडरिक पिनकाट लिखता है— ''श्री गुरु नानक देव जी ने यह सच घर-घर में पहुंचा दिया कि सभी एक जैसे हैं। कोई ऊंचा, कोई नीचा, कोई बुरा, कोई अच्छा, कोई विशेष, कोई आम और कोई अछूत नहीं। इन विचारों ने एक नई विचारधारा इस विश्व को दी।''

स्त्री को योग्य स्थान व सम्मान देना : श्री गुरु नानक देव जी से पहले स्त्री को समाज में योग्य स्थान प्राप्त नहीं था और न ही उसे उतना सम्मान दिया जाता था, जितने की वह अधिकारिणी थी। गरीब घर की स्त्रियों की दशा तो दयनीय व शोचनीय थी ही, अपितु अमीर घर की स्त्रियों को भी अपने निकट संबंधियों की प्रताड़ना, जुल्म, धक्केशाही का शिकार होना पड़ता था। मुस्लिम शहंशाहों, सरदारों, जागीरदारों के हरमों में अनेक स्त्रियों को गुलाम बनाकर या यूं कहें कि रखैल बनाकर रखा जाता था, जो कि उनका मनोरंजन, काम-धंधा करने के अलावा उनकी दैहिक वासना की पूर्ति करती थीं। समाज में आम व खास स्त्रियों की हालत अति दुरूह, निम्न कोटि की होती थी। औरत को पैर की जूती समझा जाता था। विधवा होने पर उसे सती होने के लिए मजबूर किया जाता था। भेड़-बकरियों की तरह औरतों की खरीदो-फरोख्त होती थी

बाकायदा बोली लगाकर। स्त्रियां घुट-घुटकर जीने एवं मरने को विवश थीं।

आज हमारे समाज में बिगड़ चुके लिंगानुपात की बहुत चर्चा होती है और कन्या-भ्रूण हत्या को दंडनीय अपराध घोषित किया गया है। श्री गुरु नानक देव जी ने बहुत पहले ही लोगों को इस मानवीय त्रासदी के बारे में सजग कर दिया था। उन्होंने जहां एक ओर जाति, जन्म और शरीर के एक होने की बात कही, वहीं दूसरी ओर लिंग के आधार पर भेदभाव को मिटाने पर भी जोर दिया। उनसे बड़ा समाज-सुधारक तथा स्त्रियों का रक्षक व हमदर्द कोई दूसरा नहीं हो सकता। समाज एक इकाई है और स्त्री इसका आधा भाग है। पश्चिम के चिंतकों ने स्त्री को प्रकृति की एक स्त्री को प्रकृति की एक भूल कहकर दुत्कारा तथा इसकी निंदा की। यूनानी दार्शनिक अरस्तु ने स्त्री को अपूर्ण उन्नति कहा। कवि तुलसीदास ने इसे आधा विष व आधा अमृत कहा और इसे ढोल, मूर्ख, शूद्र एवं पशु की भांति ताड़न की अधिकारी बताया। इसलाम ने दो स्त्रियों की गवाही को एक पुरुष की गवाही के बराबर माना। महात्मा बुद्ध ने तो यहां तक कह दिया कि स्त्री में कोई आत्मा ही नहीं होती।

यूनीवर्सल ट्रुथ की तरह गुरु जी का अति सुंदर कथन है कि (उस) स्त्री को बुरा क्यों कहा जाए जो उत्तम-जनों यानि राजाओं को भी जन्म देती है?

सो किउ मंदा आखीऐ जितु जंमहि राजान॥

(पन्ना ४७३)

अत्याचार के विरुद्ध और सच के पक्ष में आवाज़ उठाना : श्री गुरु नानक देव जी विश्व के पहले ऐसे रूहानी रहबर थे, जिन्होंने निर्भयता के साथ अत्याचारी, क्रूर, अन्यायी हुक्मरानों के विरुद्ध आवाज उठाई तथा सच, न्याय, सदाचार, समानता के पक्ष में ज़ोरदार प्रचार किया। उस समय कट्टर व ज़ालिम शासक अपना किसी किस्म का विरोध सहन नहीं करते थे और विरोधियों व बागियों को कठोर दंड एवं यातनाएं दिया करते थे। ये श्री गुरु नानक देव जी ही थे, जिन्होंने सच एवं मानवीय अधिकारों के लिए सामाजिक क्रांति का परचम फहराया। उन्होंने निडर व निर्भीक रहकर शासकों को उनके अवगुण व दोष बताए। शासकों को लोभ-लालच में और जनता को अज्ञानता के अंधेरे में फंसे हुए बताया।

गुरु जी ने कहा कि शासकों का काम है कि वे लोगों की रक्षा करें, मगर वे तो ऐशपरस्ती में मगन होकर जनता रूपी रत्न की संभाल नहीं करते। गुरु जी ने लोगों को अपने अधिकारों हेतु संगठित होने के लिए प्रेरित किया। बहुरूपियों को बुरा बताया। *''अंतरि पूजा पड़हि कतेबा संजम तुरका भाई॥''* नीति अपनाने वालों की कड़ी आलोचना की। पराई बोली, पराई संस्कृति अपनाने वालों की भी निंदा की। राजनीतिक तौर पर श्री गुरु नानक देव जी ऊंच-नीच, राजा-प्रजा, हाकिम व हुकूमत के बीच अंतर को भी सही नहीं मानते थे। उन्होंने निर्भयता के साथ फरमाया कि राजा लोग शींह हो गए हैं और उनके कर्मचारी कुत्ते— *''राजे सीह मुकदम कुते॥''* गुरु जी ने खून के सोहिले गाकर कहा कि कौन कहता है कि राजा गलती नहीं कर सकता? राजाओं की गलतियों की सज़ा तो हम लोग भुगत रहे हैं।

श्री गुरु नानक देव जी एक ही परमात्मा की बादशाहत (सत्ता) में यकीन रखते थे। उनका फरमान था— *''एको हुकमु वरतै सभ लोई॥''* उस बादशाहत में कोई राजा, प्रजा या कोई अन्य

आदेश देने वाला नहीं है :

रयति राजे कहा सबाए दुहु अंतरि सो जासी ॥
कहत नानकु गुर सचे की पउड़ी रहसी अलखु निवासी ॥ *(पन्ना १०१६)*

गुरु जी ने लोगों को स्वाभिमान, आत्मसम्मान की रक्षा हेतु भी प्रेरित किया।

पवित्रता और सरलता अपनाने पर ज़ोर देना : धर्म-कर्म के लिए आडंबर व ढोंग रचने की जरूरत पाखंडियों एवं बहुरूपियों को होती है, सच्चे गुरुओं, फकीरों या पीरों को नहीं होती। श्री गुरु नानक देव जी ने सच का उपदेश देते हुए बताया कि संसार में रहते हुए ही वाहिगुरु को पाया जा सकता है। संसार से पलायन करने की ज़रूरत नहीं है। सी. एच. पेने सही कहते हैं— ''असली धर्म श्री गुरु नानक देव जी ने दर्शाया। मुसलमानों, हिंदुओं, किसानों, दुकानदारों, सिपाहियों, गृहस्थियों को उन्होंने अपने-अपने काम करते हुए कामयाबी से प्रभु-प्राप्ति का रास्ता बताया। गुरु जी ने लोगों को बेकार के दर्शनों, रस्मों-रिवाज़ों, रीतियों और जात-पांत के बंधनों से मुक्त करवाया।''

''*गली भिसति न जाईऐ*'' अर्थात् बातों से सफलता नहीं मिलती। जगत्-गुरु जी ने मुसलमानों को उनकी नमाज़, सच, हलाल, भलाई, साफ नीयत एवं अल्लाह के भय में रहने वाली बातें करने का उपदेश दिया :

पहिला सचु हलाल दुइ तीजा खैर खुदाइ ॥
चउथी नीअति रासि मनु पंजवी सिफति सनाइ ॥
(पन्ना १४१)

मुसलमान वही है, जिसे मज़हब प्यारा लगे, जो मज़हब की आगवानी में चले, खुदा की रज़ा में रहे, कादर को सब कुछ करने वाला जाने, खुदी को मिटा डाले, खुदा की सारी खलकत से प्यार करे, किसी को काफिर न कहे। ऐसा बने, तभी वह मुसलमान है :

अवलि अउलि दीनु करि मिठा
मसकल माना मालु मुसावै ॥
होइ मुसलिमु दीन मुहाणै
मरण जीवण का भरमु चुकावै ॥
रब की रजाइ मंने सिर उपरि
करता मंने आपु गवावै ॥
तउ नानक सरब जीआ मिहरंमति होइ
त मुसलमाणु कहावै ॥ *(पन्ना १४१)*

जनेऊ को ही केवल धर्म समझने वालों को उन्होंने समझाया कि तुम्हारा जनेऊ यदि दया, संतोष, सब्र, आचरण एवं सच्चाई नहीं सिखलाता, तो यह किसी काम का नहीं। योगी के बारे में उनका स्पष्ट मत है कि योगी वही है, जो लोगों को आपस में जोड़ने का काम करे, सभी में प्रभु का प्रकाश समझे, सब पर उसकी कृपा समझे।

श्री गुरु नानक देव जी ने अपने उपदेशों में नाम-दान-स्नान दृढ़ करना भी सिखाया। नाम का अर्थ प्रभु की ओर मुख, दान का अर्थ दुनिया का दर्द बांटना, स्नान का अर्थ स्वयं की ओर देखना अर्थात् अपने अवगुण दूर कर स्वयं का व्यक्तित्व संवारना।

सिक्खों ने श्री गुरु नानक देव जी के उपदेशों को आत्मसात करते हुए इन्हें सार रूप में अपनी नित्य की अरदास में इस तरह शामिल किया है— ''*नानक नाम चढ़दी कला।*
तेरे भाणे सरबत्त दा भला।''

पथ-प्रदर्शक श्री गुरु नानक देव जी

-डॉ. परमजीत कौर*

शान्ति के पुंज, साझीवालता के समर्थक, समूचित मानवता के मसीहा, विनम्रता की मूर्ति, श्री गुरु नानक देव जी का प्रकाश संवत् १५२६ को राय भोए की तलवंडी, जिला शेखूपुरा, पाकिस्तान में पिता महिता कलिआण दास जी (कालू जी) तथा माता त्रिपता जी के गृह में हुआ। श्री गुरु नानक देव जी के आगमन के समय देश तथा समाज की दशा बहुत चिंताजनक थी। जुल्म तथा अत्याचार से त्रस्त मानवता बहुत व्याकुल थी। हिंदू धर्म का आधार डगमगा गया था। झूठ तथा पाखण्ड का बोलबाला था। श्री गुरु नानक देव जी के अनुसार :

—कलि काती राजे कासाई
धरमु पंख करि उडरिआ॥
कूडु अमावस सचु चंद्रमा
दीसै नाही कह चड़िआ॥ (पन्ना १४५)
—सरम धरम का डेरा दूरि॥
नानक कूडु रहिआ भरपूरि॥ (पन्ना ४७१)

भाई गुरदास जी के शब्दों में :

कलि आई कुते मुही खाजु होइआ मुरदार गुसाई।
राजे पापु कमांवदे उलटी वाड़ खेत कउ खाई ।..
वरतिआ पापु सभसि जगि मांही॥ (वार १:३०)

श्री गुरु नानक देव जी के आगमन से एक नए युग का प्रारम्भ हुआ। आपने सारे संसार का भ्रमण करते हुए लोगों को अज्ञानता, भ्रम-पाखंड, अंधविश्वास तथा कर्मकाण्ड के जाल से मुक्त किया :

बाबे भेख बणाइआ उदासी की रीति चलाई।
चढ़िआ सोधणि धरति लुकाई॥ (वार १:२४)

आपने १९ रागों में बाणी उच्चारण कर अपने उपदेशों तथा परस्पर संवाद के माध्यम से साझीवालता का संदेश देते हुए ऊंच नीच, छुआ छूत, जात पांत, अमीरी गरीबी के भेदभाव को मिटाकर एकता, प्यार तथा शान्ति के साथ जीवन बिताने का ढंग सिखाया।

आज हम श्री गुरु नानक देव जी द्वारा प्रदर्शित मार्ग से भटक गए हैं। मनुष्य की संकीर्ण मनोवृत्ति उसको प्रेम, मैत्री, उदारता और सत्य के आदर्श मार्ग से हटाकर खुदगर्जी, निर्दयता, अलगाव एवं असत्य के भ्रमपूर्ण मार्ग की ओर ले जा रही है।

यदि मनुष्य का इष्ट एक हो, जीवन का लक्ष्य एक हो तो जाति-भेद, ऊंच-नीच से उत्पन्न भेदभाव समाप्त हो जाता है। बहुदेवतावाद तथा अनेक ईश्वर के स्थान पर श्री गुरु नानक देव जी ने एक परमात्मा की आराधना का उपदेश दिया है :

साहिबु मेरा एको है॥

*६२०, गली नं. १, छोटी लाईन, संतपुरा, यमुनानगर (हरियाणा), फोन : ९८१२३-५८१८६

एको है भाई एको है ॥ *(पन्ना ३५०)*

जो जीव एक परमात्मा का गुण-गान करता है, एक परमात्मा का ही आश्रय लेता है, वह गंभीर स्वभाव वाला बन जाता है तथा अपने जीवन-लक्ष्य के बारे में सोचने लग जाता है :

कहतउ पड़तउ सुणतउ एक ॥
धीरज धरमु धरणीधर टेक ॥
जतु सतु संजमु रिदै समाए ॥
चउथे पद कउ जे मनु पतीआए ॥

(पन्ना ६८६)

किसी अन्य की पूजा-अर्चना करना फलदायक नहीं होता :

राम नामु जपि अंतरि पूजा ॥
गुर सबदु वीचारि अवरु नही दूजा ॥१ ॥
एको रवि रहिआ सभ ठाई ॥
अवरु न दीसै किसु पूज चड़ाई ॥

(पन्ना १३४५)

जीव का परमात्मा के साथ बहुत निकट का सम्बंध है। हमारी कोई भी क्रिया उसके हुक्म के बाहर नहीं है :

नेड़ा है दूरि न जाणिअहु नित सारे संम्हाले ॥
जो देवै सो खावणा कहु नानक साचा हे ॥

(पन्ना ४८९)

दुविधा को त्याग कर प्रभु के दर का आश्रय लेना ही सुखी जीवन का आधार है :

अन को दरु घरु कबहू न जानसि
एको दरु सचिआरा ॥
गुर परसादि परम पदु पाइआ
नानकु कहै विचारा ॥ *(पन्ना ११२६)*

परमात्मा की आराधना करने से एक मनुष्य का दूसरे मनुष्य के साथ आत्मिक संबंध बन जाता है, हृदय में प्रेम पैदा हो जाता है। मानव-जाति के बीच पैदा हो रहे भेदभाव रूपी खाई को परमात्मा के प्रेम से ही भरा जा सकता है।

गुरु साहिब ने जाति-भेद को दूर करने के लिए स्थान-स्थान पर साधसंगति की स्थापना की, जिसमें चारों वर्णों के लोग शामिल होते थे। भाई गुरदास जी के अनुसार :

चारि वरन गुरसिख संगति आवणा ।(वार १४:२)

जहां परमात्मा के नाम का स्मरण किया जाए वहां साधसंगति (सतसंगति) है :

सतसंगति कैसी जाणीऐ ॥
जिथै एको नामु वखाणीऐ ॥ *(पन्ना ७२)*

श्री गुरु नानक देव जी ने समझाया है कि मजहब के आधार पर एक मनुष्य दूसरे मनुष्य से भिन्न नहीं है। आप जी ने यह उद्घोष किया कि कोई भी हिंदू या मुसलमान होने के कारण बड़ा नहीं है। जिसके शुभ कर्म हैं वही बड़ा है, उच्च है। भाई गुरदास जी के शब्दों में :

पुछनि फोलि किताब नो
हिंदू वडा कि मुसलमानोई ?
बाबा आखे हाजीआ
सुभि अमला बाझहु दोनो रोई। (वार १:३३)

आपने किसी पर भी अपने मज़हब को छोड़ने के लिए दबाव नहीं डाला, केवल कल्याण का मार्ग दिखाते हुए अपने मार्ग में सच्चा तथा पवित्र रहने का उपदेश दिया है। मुसलमानों को सच्चा मुसलमान बनने के लिए समझाते हुए आप कहते

हैं कि असल मुसलमान बनने कि लिए सर्वप्रथम जरूरी है कि मज़हब प्यारा लगे। फिर अपनी मेहनत से अर्जित धन जरूरतमंद लोगों में बांट कर उपयोग करे। कादर को ही कर्त्ता मानो। परमात्मा द्वारा पैदा किए गए सारे जीवों से प्रेम करो :

अवलि अउलि दीनु करि मिठा
मसकल माना मालु मुसावै ॥
होइ मुसलिमु दीन मुहाणै
मरण जीवण का भरमु चुकावै ॥
रब की रजाइ मंने सिर उपरि
करता मंने आपु गवावै ॥
तउ नानक सरब जीआ मिहरंमति होइ
त मुसलमाणु कहावै ॥ (पन्ना १४१)

ब्राह्मणों को समझाया कि जो प्रभु में ध्यान लगाता है, प्रभु की विचार करता है, वही ब्राह्मण है :

सो ब्राहमणु जो ब्रहमु बीचारै ॥
आपि तरै सगले कुल तारै ॥ (पन्ना ६६२)

आवश्यक है कि श्री गुरु नानक देव जी के इस सिद्धांत का प्रचार किया जाए ताकि इससे जुड़ी हुई सामाजिक तथा राजनीतिक उलझनों को सुलझाया जा सके।

गुरु जी के मत में स्त्री भी पुरुष के समान ही सम्मान की अधिकारिणी है। जो स्त्री संत, महात्मा, ऋषि, मुनि तथा राजा-महाराजा की भी जन्म-दाती है उसको हीन मानना उचित नहीं। सशक्त समाज के लिए आवश्यक है कि स्त्री का सम्मान किया जाए :

सो किउ मंदा आखीऐ जितु जंमहि राजान ॥
(पन्ना ४७३)

मेहनत से धन अर्जित करना (किरत करना), नाम जपना तथा बांट कर खाना ही सुखी जीवन का आधार है। गुरु साहिब ने उचित साधनों से सत्य के मार्ग पर चलते हुए मेहनत से धन अर्जित कर उसमें से दीन-हीन जरूरतमंद लोगों की मदद करने का आदेश दिया है :

घालि खाइ किछु हथहु देइ ॥
नानक राहु पछाणहि सेइ ॥ (पन्ना १२४५)

परमात्मा के डर, अदब में रहकर सदाचार का पालन करते हुए धन कमाना जीवन की जरूरत है, पर जब तृष्णा के अधीन लोभग्रस्त होकर, असत्य का सहारा लेकर धन अर्जित किया जाता है तब मनुष्य मानसिक शान्ति खो बैठता है, शरीर रोगी हो जाता है। जीवन पतन के रास्ते पर चल पड़ता है। आज मनुष्य के दुख, संताप तथा क्लेश का यही मुख्य कारण बन गया है। श्री गुरु नानक देव जी ने पर-धन आदि का मोह त्याग कर अपनी मेहनत की कमाई में संतुष्ट रहने का उपदेश दिया है तथा सचेत किया है कि यही मार्ग कल्याणकारी है :

—पर धन पर नारी रतु निंदा
बिखु खाई दुखु पाइआ ॥ (पन्ना १२५५)
—सत संतोखि रहहु जन भाई ॥
खिमा गहहु सतिगुर सरणाई ॥ (पन्ना १०३०)

आपने पर-धन पर कुदृष्टि डालकर धन कमाने वाले मलिक भागो के ब्रह्मभोज को स्वीकार न कर मेहनत से धन कमाने वाले निर्धन भाई लालो की कोधरे की रोटी को स्वीकार किया तथा समझाया कि पराया हक मारना पाप है :

—हकु पराइआ नानका उसु सूअर उसु गाइ ॥
(पन्ना १४१)

—जे रतु लगै कपड़ै जामा होइ पलीतु ॥
जो रतु पीवहि माणसा तिन किउ निरमलु चीतु ॥
(पन्ना १४०)

बांटकर खाने के सिद्धांत से स्वभाव में विनम्रता तथा परोपकार की भावना पैदा होती है तथा प्रेम बढ़ता है। इसलिए आवश्यक है कि अपनी आय में से दसवां भाग निकालकर निर्धन लोगों (विद्यार्थी आदि) की सहायता की जाए तथा असहाय वृद्धों की दवा आदि का प्रबंध किया जाए।

इस प्रतियोगिता के युग में माया-लिप्त जीव कार्यों की व्यस्तता का आश्रय लेकर अपने आत्मिक जीवन से निरंतर दूर होता जा रहा है। मन की शांति की खोज में तीर्थ-स्नान आदि कर्मकाण्डों का सहारा लेकर अपने मन को समझाने का यत्न करता है कि ये कर्म उसके मन की मैल को दूर करने तथा कार्य-व्यवहार में किए छल कपट आदि पापों से मुक्त करने में सहायक होते हैं। गुरु साहिब इस भ्रम को दूर करते हुए समझाते हैं कि तन को धोने से मन की मैल दूर नहीं होती :

—अंतरि मैलु तीरथ भरमीजै ॥
मनु नही सूचा किआ सोच करीजै ॥ (पन्ना ९०५)

—अंतरि मैलु लोभ बहु झूठे
बाहरि नावहु काही जीउ ॥
निरमल नामु जपहु सद गुरमुखि
अंतर की गति ताही जीउ ॥ (पन्ना ५९८)

मन की मैल एवं विकार केवल परमात्मा का आश्रय लेकर, परमात्मा के नाम के सिमरन से ही दूर किये जा सकते हैं। परमात्मा के ज्ञान रूप नाम-अमृत-जल में स्नान करने से मन तथा तन दोनों पवित्र हो जाते हैं :

गिआनि महा रसि नाईऐ भाई
मनु तनु निरमलु होइ ॥ (पन्ना ६३७)

श्री गुरु नानक देव जी ने गृहस्थ के कर्त्तव्यों का पालन करते हुए प्रभु-सिमरन का उपदेश दिया है तथा दृढ़ करवाया है कि जिंदगी के वास्तविक मनोरथ प्रभु-मिलाप को प्राप्त करने कि लिए परमात्मा के नाम का सिमरन ही एक मात्र उपाय है, आश्रय है :

प्राणी एको नामु धिआवहु ॥
अपनी पति सेती घरि जावहु ॥ (पन्ना १२५४)

दुनिया की खुशामदें, चतुराई, बुद्धिमता आदि हानिकारक हैं, केवल परमात्मा का नाम ही सहायता करता है :

चाकरीआ चंगिआईआ अवर सिआणप कितु ॥
नानक नामु समालि तूं बधा छुटहि जितु ॥
(पन्ना ७२९)

जो जीव परमात्मा की बंदगी को छोड़कर कर्मकांडों में उलझे रहते हैं वे मानों वृक्ष के मूल को छोड़कर टहनियों से छाया की उम्मीद करते हैं :

जिन्ही नामु विसारिआ दूजै भरमि भुलाई ॥
मूलु छोडि डाली लगे किआ पावहि छाई ॥
(पन्ना ४२०)

हृदय में प्रभु-प्रेम पैदा करने के लिए शुभ कर्मों से अपने को संवारना बहुत जरूरी है।

अपने अंदर से अवगुणों को दूर कर गुणों को धारण करने से ही परमात्मा का सामीप्य प्राप्त किया जा सकता है :

—सभि अवगण मै गुणु नही कोई ॥
किउ करि कंत मिलावा होई ॥ (पन्ना ७५०)
—अवगणि सुभर गुण नही
बिनु गुण किउ घरि जाउ ॥ (पन्ना १०१०)

गुरु जी ने सदाचारक जीवन जीने पर बल दिया है। सत्य, संतोष, दया, विनम्रता, सहनशीलता, परोपकार की भावना, किसी का बुरा न करना, मधुर वाणी बोलना आदि गुणों को धारण करने से माया की जंजीरों में से निकलने का रास्ता आसान हो जाता है। हृदय को पवित्र आचरण से तैयार करके ही नाम रूपी बीज बोया जा सकता है :

—पहिला धरती साधि कै सचु नामु दे दाणु ॥
नउ निधि उपजै नामु एकु करमि पवै नीसाणु ॥
(पन्ना १९)
—मनु मोती जे गहणा होवै
पउणु होवै सूत धारी ॥
खिमा सीगारु कामणि तनि पहिरै
रावै लाल पिआरी ॥ (पन्ना ३५९)

आज इस वैज्ञानिक युग में भी मनुष्य खोखले भ्रमों के चक्रव्यूह में फंसा हुआ अपना समय तथा धन दोनों नष्ट कर रहा है। जन्म-मरण संसार-चक्र का अभिन्न अंग है। इसके भ्रम में पड़कर सूतक आदि को मानना अज्ञानता का परिचायक है। गुरु साहिब के अनुसार इनके भ्रम में पड़ने के स्थान पर अपने अंदर से लोभ, झूठ, निंदा, पर-स्त्री की ओर कुदृष्टि आदि विकारों को दूर करना चाहिये, जो हृदय-घर को सदा अपवित्र बनाये रखते हैं :

मन का सूतकु लोभु है जिहवा सूतकु कूड़ु ॥
अखी सूतकु वेखणा पर त्रिअ पर धन रूपु ॥
कंनी सूतकु कंनि पै लाइतबारी खाहि ॥
नानक हंसा आदमी बधे जम पुरि जाहि ॥
(पन्ना ४७२)

इसी तरह वहम-भ्रम, शकुन-अपशकुन, दिन-मुहूर्त तंत्र-मंत्र, धागे-ताबीज़ आदि में विश्वास अज्ञानता के उस अन्धकारमयी मार्ग पर ले जाता है जो मानवता के लिए अकल्याणकारी है :

अवरु न अउखधु तंत न मंता ॥
हरि हरि सिमरणु किलविख हंता ॥ (पन्ना ४१६)

आज शराब आदि नशे के सेवन की आदत के कारण नौजवान वर्ग भ्रष्टाचार की दलदल में फंसता जा रहा है। मानसिक तनाव एवं बेरोज़गारी के कारण कई तरह के रोगों का शिकार हो गया है तथा आत्म-हत्या के रास्ते को अपना रहा है। श्री गुरु नानक देव जी ने इन नशों को झूठ-रस कहा है :

अंम्रित का वापारी होवै
किआ मदि छूछै भाउ धरे ॥ (पन्ना ३६०)

इसको पीने से बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है, इसलिए इसको कभी नहीं पीना चाहिए। मानवता के कल्याण के लिए आपने अपनी बाणी में प्रकृति के महत्त्व को समझाया है :

कुदरति पउणु पाणी बैसंतरु
कुदरति धरती खाकु ॥
सभ तेरी कुदरति तूं कादिरु करता

पाकी नाई पाकु ॥ *(पन्ना ४६४)*

आज पानी की कमी तथा प्रदूषण की समस्या मानवता को विनाश के मार्ग पर ले जा रही है। पानी को पिता का दर्जा देकर गुरु जी ने पानी के महत्त्व को उजागर किया है तथा उसका दुरुपयोग करने से रोका है। वायु को 'गुरु' कहकर सम्मानित किया है, क्योंकि यदि पवन दूषित हो जाए तो विनाश का खतरा पैदा हो जाता है। इसी तरह धरती को माता कहकर समझाया है कि धरती जीवन-दात्री है, इसलिए वृक्षों को न काटा जाए :

पवणु गुरू पाणी पिता माता धरति महतु ॥

(पन्ना ८)

प्रदूषण की समस्या के निवारण के लिए आवश्यक है कि कुदरत में कादर को देखा जाए तथा वाहनों का अधिक उपयोग न किया जाए। पैदल चलने की आदत बनायी जाए। श्री गुरु नानक देव जी का आदेश है :

बाबा होरु खाणा खुसी खुआरु ॥
जितु खाधै तनु पीड़ीऐ मन महि चलहि विकार ॥

(पन्ना १६)

आपके अनुसार समाज तथा परिवार में प्रेम एवं शान्ति बनाए रखने के लिए आवश्यक है कि पारस्परिक मतभेदों को भुलाकर दूसरों की बात को सुना जाए तथा गुणों को ग्रहण करने का यत्न किया जाए :

—जब लगु दुनीआ रहीऐ नानक
किछु सुणीऐ किछु कहीऐ ॥ *(पन्ना ६६१)*
—साझ करीजै गुणह केरी
छोडि अवगण चलीऐ ॥ *(पन्ना ७६६)*

मनुष्य की कमजोरियों तथा अवगुणों का कारण उसका अपने मन को वश में करने में असमर्थ होना है। सुखी जीवन के लिए अपने मन पर नियन्त्रण करना जरूरी है। मन वश में आ जाए तो माया प्रभाव नहीं डाल सकती :

. . . मनि जीतै जगु जीतु ॥ *(पन्ना ६)*

यह याद रखना चाहिए कि सांसारिक धन, शारीरिक सुख झूठा मान-सम्मान तो दे सकता है पर मानसिक शान्ति नहीं दे सकता। जो जीव इस धन को एकत्र कर अपने आप को बड़ा शाह समझता है वह सदा दुखी रहता है :

सुइना रुपा संचीऐ धनु काचा बिखु छारु ॥
साहु सदाए संचि धनु दुबिधा होइ खुआरु ॥

(पन्ना ९३७)

नाम के बिना सर्वत्र अभाव ही है :
विणु नावै तोटा सभ थाइ ॥
लाहा मिलै जा देइ बुझाइ ॥ *(पन्ना ९३१)*

जिन लोगों पर प्रभु की कृपा हो जाती है वे अपने जीवन को परखते-पड़तालते रहते हैं। गुरु-शबद की विचार करने से वे समझ जाते हैं कि उनका वास्तविक घर कौन-सा है। ऐसे मनुष्य व्यर्थ के आडम्बरों में नहीं पड़ते :

जागतु जागि रहा तुधु भावा ॥
जा तू मेलहि ता तुझै समावा ॥ *(पन्ना ९३३)*

संक्षेप में कहा जा सकता है कि श्री गुरु नानक देव जी के द्वारा निर्दिष्ट मार्ग पर चलकर ही समाज तथा देश का कल्याण हो सकता है।

महान आध्यात्मिक चिंतक : श्री गुरु रामदासजी

*-डॉ. राजेंद्र सिंघ साहिल**

चतुर्थ पातशाह साहिब श्री गुरु रामदास जी का आगमन २५ आश्विन, संवत् १५९१ बिक्रमी तद्नुसार २४ सितंबर, सन् १५३४ ई. को लाहौर शहर की चूना मंडी बस्ती में हुआ। आपके पिता का नाम श्री हरिदास जी और माता का नाम माता दया कौर जी था। घर में सबसे बड़ा पुत्र होने के कारण आपको 'जेठा' कहकर पुकारा जाता था।

संघर्ष एवं अभाव-युक्त बचपन : आपकी आयु अभी सिर्फ सात वर्ष की ही हुई थी कि पहले माता जी और उसके कुछ समय बाद पिता जी अकाल प्रस्थान कर गये। माता-पिता का साया असमय ही सिर से उठ गया। आपकी नानी आपको ननिहाल ले आईं। आपकी ननिहाल श्री अमृतसर जिले के बासरके गांव में थी। यह बासरके गांव तीसरे पातशाह श्री गुरु अमरदास जी का जन्म-स्थान भी है। भाई जेठा जी का पालन-पोषण इसी गांव में हुआ। परिवार की आर्थिक जिम्मेदारियों में हिस्सा बंटाने के लिए आप घुंघनियां (भिगो कर तला हुआ चना) बेचा करते थे।

तीसरे पातशाह की शरण में जाना : १२ वर्ष की आयु में एक बार गोइंदवाल साहिब गये । यहां तीसरे पातशाह श्री गुरु अमरदास जी के दर्शन कर इतने प्रभावित हुए कि सदा के लिए गुरु-चरणों में ही रहने का निश्चय कर लिया। आपने गुरु-सेवा को ही अपने जीवन का पहला उद्देश्य बना लिया। सुबह-सवेरे से ही गुरु जी की सेवा में जुट जाते। फिर लंगर में सेवा करते और अंत में जो समय बचता उसमें घुंघनियां बेचा करते।

बीबी भानी जी से अनंद कारज : तीसरे पातशाह श्री गुरु अमरदास जी आपकी सेवा-साधना और विनम्रता से भरे व्यक्तित्व से अत्यंत प्रभावित थे। एक बार की घटना है— तीसरे पातशाह अपनी सुपत्नी माता राम कौर जी के साथ विराजमान थे। माता राम कौर जी ने गुरु जी से कहा कि पुत्री बीबी भानी के विवाह की भी कुछ फिक्र करो। गुरु जी ने पूछा कि बेटी भानी के लिए कैसा वर चाहिए? सामने भाई जेठा जी घुंघनियां बेच रहे थे। माता राम कौर जी बोले, वर तो 'जेठे' जैसा होना चाहिए। गुरु जी ने वचन किया— ''उसके जैसा तो बस, वही है।'' इस प्रकार सन् १५५३ ई. में भाई जेठा जी का अनंद कारज बीबी भानी जी के साथ हो गया।

श्री गुरु रामदास जी ने 'लावां' वाली बाणी उच्चारण की। इसमें आत्मा-परमात्मा के मिलन का वर्णन किया गया है। अब ये 'लावां' बाणी सिक्खों में 'अनंद कारज' अर्थात् विवाह के समय एक-एक फेरे के साथ एक-एक पढ़ी जाती है। हर फेरे में श्री गुरु ग्रंथ साहिब की परिक्रमा की जाती है। वर-वधू चार परिक्रमाएं करते हैं और 'अनंद कारज' सम्पन्न होता है।

भाई जेठा जी और बीबी भानी जी के यहां तीन पुत्रों का जन्म हुआ— प्रिथीचंद, महांदेव और पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी।

अमृत सरोवर की स्थापना : आपकी योग्यता के कारण पहले श्री गुरु अमरदास जी ने आपको गोइंदवाल साहिब में बावली के निर्माण का कार्य सौंपा, जो संवत् १६२१ में सम्पन्न हुआ। इसके पश्चात गुरु-आज्ञा के अनुसार आपने तुंग, गुमटाला, गिलवाली, सुल्तानविंड आदि गांवों की भूमि खरीद कर 'संतोखसर' नामक सरोवर की खुदाई

**१/३३८, स्वप्नलोक, दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना), पंजाब-१४११०१, फोन : ९४१७२-७६२७१*

आरंभ करवाई। बाद में नये नगर 'गुरु का चक्क' की नींव रखी गई। 'अमृत सरोवर' की खुदाई आरंभ हुई। पहले इस सरोवर को 'रामदास सर' कहा गया जो बाद में 'अमृतसर' हो गया। फिर इसी पवित्र सरोवर के नाम पर नगर का नाम भी 'अमृतसर' प्रसिद्ध हो गया।

गुरुआई की प्राप्ति : सन् १५७४ ई. में सभी प्रकार से योग्य जानकर तीसरे पातशाह श्री गुरु अमरदास जी ने गुरुआई भाई जेठा को सौंप दी और ज्योति-जोत समा गये। भाई जेठा जी चतुर्थ पातशाह श्री गुरु रामदास जी के रूप में गुरुआई पर सुशोभित हुए। गुरु जी ने श्री अमृतसर नगर के विकास के लिए विशेष प्रयास किये। ५२ व्यवसाय वाले कारीगरों को लाकर नगर में बसाया ।

चतुर्थ पातशाह की बाणी : चतुर्थ पातशाह ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब में प्रयुक्त ३१ रागों में से ३० रागों में बाणी का उच्चारण किया है। गुरु जी के कुल शबदों की संख्या ६४४ है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में चतुर्थ पातशाह द्वारा उच्चरित आठ वारें दर्ज हैं :—

१) सिरी राग की वार
२) गउड़ी की वार
३) बिहागड़ा की वार
४) वडहंसु की वार
५) सोरठि की वार
६) बिलावलु की वार
७) सारंग की वार
८) कानड़े की वार

प्रेमा-भक्ति : चतुर्थ पातशाह श्री गुरु रामदास जी की बाणी में अकाल पुरख के प्रति प्रेम की भावना के दर्शन होते हैं। प्रेम की अति सूक्ष्म भावना गुरु जी की बाणी में व्याप्त है :

कोई आणि मिलावै मेरा प्रीतमु पिआरा
हउ तिसु पहि आपु वेचाई ॥१ ॥
दरसनु हरि देखण कै ताई ॥
क्रिपा करहि ता सतिगुरु मेलहि
हरि हरि नामु धिआई ॥१ ॥रहाउ ॥
जे सुखु देहि त तुझहि अराधी
दुखि भी तुझै धिआई ॥२ ॥
जे भुख देहि त इत ही राजा
दुख विचि सूख मनाई ॥३ ॥
तनु मनु काटि काटि सभु अरपी
विचि अगनी आपु जलाई ॥४ ॥
पखा फेरी पाणी ढोवा जो देवहि सो खाई ॥५ ॥
नानकु गरीबु ढहि पइआ दुआरै
हरि मेलि लैहु वडिआई ॥ (पन्ना ७५७)

चौथे पातशाह ने ऐसा ही प्रेम और समर्पण गुरु के प्रति भी व्यक्त किया है :

सा धरती भई हरीआवली
जिथै मेरा सतिगुरु बैठा आइ ॥
से जंत भए हरीआवले
जिनी मेरा सतिगुरु देखिआ जाइ ॥ (पन्ना ३१०)

गुरु जी की बाणी में प्रेम और विनम्रता के बड़े स्पष्ट दर्शन होते हैं :

तूं घट घट अंतरि सरब निरंतरि जी
हरि एको पुरखु समाणा ॥
इकि दाते इकि भेखारी जी
सभि तेरे चोज विडाणा ॥ (पन्ना ३४८)

आध्यात्मिक चिंतन ही नहीं गुरु पातशाह की बाणी में जीवन के सहज-गहन अनुभव भी व्यक्त हुए हैं :

जिसु अंदरि ताति पराई होवै
तिस दा कदे न होवी भला ॥
ओस दै आखिऐ कोई न लगै
नित ओजाड़ी पूकारे खला ॥ (पन्ना ३०८)

ज्योति-जोत समाना : चतुर्थ पातशाह श्री गुरु रामदास जी ने सात वर्ष तक सिक्खों का नेतृत्व किया। सन् १५८१ ई. में गुरु जी ज्योति-जोत समाये और अपने सबसे छोटे सुपुत्र श्री गुरु अरजन देव जी को सभी तरह से योग्य जानकर गुरुआई की जिम्मेदारी सौंप दी।

भक्त नामदेव जी की विचारधारा

-डॉ. परमजीत कौर*

भक्त नामदेव जी भारत के प्रमुख और सर्वोत्तम भक्तों में से एक हैं। गुरमत आशय के अनुकूल होने के कारण श्री गुरु अरजन देव जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी के संकलन के समय आप जी की बाणी '*बाणी नामदेउ जीउ की*' शीर्षक तले दर्ज की। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में भक्त नामदेव जी के ६१ शबद १८ रागों में दर्ज हैं। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में आप जी की बाणी की शमूलियत ने आपकी बाणी को अमर बना दिया और मानव-कल्याणकारी बाणी होने का सम्मान प्रदान किया।

भक्त नामदेव जी की बाणी के मूल सरोकार का धरातल मानव-शरीर, मानव-आत्मा, मानव-दुख-दर्द, मानव-कल्याण की चाह करने वाला है, जो इसके सृजनात्मक पक्ष को पूरी दृढ़ता के साथ उजागर करता है।[१]

मध्य काल का समय भारत में सामाजिक और राजनीतिक पक्ष से अराजकता का समय था। हर तरफ अनैतिकता, झूठ, जब्र, वहम-भ्रम का बोलबाला था। समाज में विप्रवाद की प्रधानता थी और तथाकथित नीची जाति के लोगों का कोई सम्मान नहीं करता था। ऐसी स्थिति में भक्त नामदेव जी भारत के उन आदि संतों-भक्तों में से एक हुए हैं जिन्होंने विप्रवाद के जब्र और दमन के विरुद्ध अपनी आवाज़ बुलंद की। झूठे कर्म-कांडों को पाखंड सिद्ध कर मानव को प्रेमा-भक्ति के मार्ग पर अग्रसर किया और बताया कि परमात्मा तक पहुंचने के लिए किसी कुल विशेष में पैदा होना ज़रूरी नहीं।[२]

भक्त नामदेव जी की बाणी से संकेत मिलता है कि उनका जन्म तथाकथित छीपा (दर्जी) जाति में हुआ था। समाज में इस वर्ग के लोगों की कोई इज्जत नहीं थी और इनको हीन भावना के अधीन निम्न होने का संताप भोगना पड़ता था। भक्त नामदेव जी फरमान करते हैं :

हीनड़ी जाति मेरी जादिम राइआ॥
छीपे के जनमि काहे कउ आइआ॥ (पन्ना ११६४)

जात-पांत मध्य काल में प्रचलित भक्ति- मार्ग के विकास में सबसे बड़ी रुकावट थी। भक्त नामदेव जी ने अपनी बाणी में जहां अपनी नीची जाति की कष्टहीन स्थिति को बयान किया है, वहीं अपनी बाणी के माध्यम से यह भी स्पष्ट किया है कि जात-पांत वास्तव में मानवीय मन की उपज है। परमात्मा तो हर मानव के मन में बसता है। भक्त नामदेव जी ने मानव की पतित हो चुकी अवस्था को पवित्रता प्रदान करने के लिए समुच्चय मानवता को संदेश दिया कि मानव की श्रेष्ठता अंश, वंश, कुल, रंग या नस्ल के अनुसार नहीं होती, बल्कि कर्म के अनुसार होती है। भक्त नामदेव जी ने जात-पांत, ऊंच-नीच के बंधन का खंडन प्रचंड रूप में किया और मानवीय मन को प्रभु-नाम में विलीन होने का उपदेश दिया :

कहा करउ जाती कह करउ पाती॥
राम को नामु जपउ दिन राती॥ (पन्ना ४८५)

भक्त नामदेव जी ने अपने समय में प्रचलित धर्मों

*असिस्टेंट प्रोफेसर, माझा कॉलेज फॉर वुमेन, तरनतारन (पंजाब); फोन: ८४२७४८४४१७

की रीतियों का खंडन करते हुए एकेश्वरवाद का संकल्प सृजित किया। भक्त नामदेव जी के अनुसार परमात्मा का स्वरूप निर्गुण और निराकार है। उन्होंने *''घट घट अंतरि सरब निरंतरि केवल एक मुरारी॥''* के माध्यम से प्रभु की सर्वव्यापकता की तरफ संकेत किया है। उन्होंने मानव को संदेश दिया कि परमात्मा किसी एक विशेष स्थान पर नहीं बसता, वो तो हर जगह विद्यमान है। मानव को धर्म के नाम पर झगड़ा करके सांप्रदायिकता को जन्म नहीं देना चाहिए, बल्कि अनुपम परमात्मा का नाम-सिमरन करना चाहिए। आचार्य रामचंद्र शुक्ल का कथन है कि ''महाराष्ट्र के प्रसिद्ध भक्त नामदेव (जी) ने हिंदू-मुसलमान दोनों के लिए मानक भक्ति-मार्ग का अभाग दिया।''[3]

भक्त नामदेव जी ने क्रांतिकारी सुर में *''हिंदू अंन्हा तुरकू काणा॥ दुहां ते गिआनी सिआणा॥''* कहकर प्रभु-भक्ति की बढ़ाई की है और स्पष्ट किया है कि बाहरी धार्मिक भेष में कुछ नहीं रखा। मानव को केवल मन को मंदिर (प्रभु का घर) समझ कर इसमें प्रभु-प्रीति की लड़ी जोड़नी चाहिए। वे खुद को धर्मों की भिन्नता से निष्पक्ष दर्शाते हैं :

हिंदू पूजै देहुरा मुसलमाणु मसीति॥
नामे सोई सेविआ जह देहुरा न मसीति॥

(पन्ना ८७५)

भक्त नामदेव जी ने परमात्मा को *''हरि की महिमा किछु कथनु न जाई॥''* कह कर अकथ्य, अगम, अगोचर और अनंत दर्शाते हुए स्पष्ट किया है कि परमात्मा रूपी रौशनी को किसी काल में बांधा नहीं जा सकता :

आदि जुगादि जुगादि जुगो जुगु
ता का अंतु न जानिआ॥ *(पन्ना १३५१)*

भक्त नामदेव जी की बाणी के अनुसार हर मानव-हृदय में परमात्मा का निवास है और परमात्मा सृष्टि के कण-कण में जीवंत है :

सभै घट रामु बोलै रामा बोलै॥
राम बिना को बोलै रे॥ *(पन्ना ९८८)*

भक्त नामदेव जी की इस विस्मादमयी अवस्था से सम्बंधित श्री प्रभाकर माचवे का कथन है कि ''Namdev tells us that he was so filled with God experience."[4]

यदि भक्त नामदेव जी प्रभु का निराकार स्वरूप बताते हैं तो सवाल यह पैदा होता है कि मानव सामाजिक प्राणी है और समाज में विचरण करते हुए उसे असली प्रभु का ज्ञान कैसे प्राप्त हो सकता है? इस सम्बंध में भक्त नामदेव जी ने *''गुर चेले है मनु मानिआ॥ जन नामै ततु पछानिआ॥''* कहकर दृढ़ करवाया है कि गुरु ही एक ऐसा साधन है, जो मानव का सही मार्गदर्शन कर सकता है। गुरु साधक को परमात्मा की ओर जाने वाले मार्ग का ज्ञान कराता है और मानव को बुद्धि-विवेक प्रदान करता हुआ विषय-विकारों के दुष्चक्कर में फंसने से बचाता है :

सफल जनमु मो कउ गुर कीना॥
दुख बिसारि सुख अंतरि लीना॥१॥
गिआन अंजनु मो कउ गुरि दीना॥
राम नाम बिनु जीवनु मन हीना॥ *(पन्ना ८५७)*

गुरु से मानव को 'शबद' की प्राप्ति होती है। 'नाम' की रहमत मिलने से मानव का मन प्रभु-सिमरन में जुड़ता है :

भनति नामदेउ इकु नामु निसतारै॥
जिह गुरु मिलै तिह पारि उतारै॥ *(पन्ना ११६४)*

भक्त नामदेव जी की बाणी में स्पष्ट होता है कि यदि मानव *''मै अंधुले की टेक तेरा नामु खुंदकारा॥ मै गरीब मै मसकीन तेरा नामु है अधारा॥''* वाली नम्रता और अथाह श्रद्धा वाली स्थिति में विचरण करेगा तो उसका मन गुरु द्वारा दिए शबद में लीन हो

सकता है। गुरु-शबद में पूर्ण टेक की अवस्था में जब मानव आत्मिक शांति की प्राप्ति करता है तो भक्त नामदेव जी की तरह मुख से उच्चारण करता है :

सति सति सति सति सति गुरदेव ॥
झूठु झूठु झूठु झूठु आन सभ सेव ॥ (पन्ना ११६६)

भक्त नामदेव जी की बाणी के अनुसार 'नाम' रूपी अमूल्य खजाने का ज्ञान मानव को सतिसंगत में बैठकर हो सकता है। सतिसंगत भी ऐसी हो जहां प्रभु की उपमा की जाए। सतिसंगत में साधु अर्थात् गुरु के वचन को सुन कर मानव को प्रभु के नाम-सिमरन की युक्ति का पता चलता है और परमात्मा का सिमरन एवं कीर्तन करने की युक्ति समझ आती है :

गुर उपदेसि साध की संगति भगतु भगतु ता को नामु परिओ ॥ (पन्ना ११०५)

सतिसंगत में ही मानव के अंदर भ्रातृ-भाव पैदा होता है। नाम-सिमरन एवं सेवा करने की रुचि से मानव दया, प्रेम, क्षमा, नम्रता आदि उच्च नैतिक गुणों का धारक हो जाता है। मानव को ज्ञान हो जाता है कि सांसारिक माया-जाल एक भ्रम है। मानव पांच विकारों से मुक्त होकर साधारण और सफल जीवन-नीति अपनाने की चाह करता है। भक्त नामदेव जी की बाणी में अंकित है कि माया को त्याग कर ही मानव परमात्मा की प्राप्ति कर सकता है और जो मानव माया-मोह में फंसा रहता है वह जन्म-मरण के चक्कर में विचरण करता है अर्थात् उस मानव की मुक्ति नहीं होती :

इह संसार ते तब ही छूटउ
जउ माइआ नह लपटावउ ॥
माइआ नामु गरभ जोनि का
तिह तजि दरसनु पावउ ॥ (पन्ना ६९३)

भक्त नामदेव जी ने मानव को सचेत किया है कि किसी भी चीज़ का अहंकार नहीं करना, क्योंकि यहां हर चीज़ नाशवान है :

काहे रे नर गरबु करत हहु
बिनसि जाइ झूठी देही ॥ (पन्ना ६९२)

इस तरह भक्त नामदेव जी की बाणी में स्पष्ट होता है कि जगत नाशवान है, शबद गुरु है और परमात्मा सर्वशक्तिमान है। मानव को दुख और सुख को समानांतर रख कर सब्र, संतोष तथा संयम भरपूर जीवन व्यतीत करते हुए सदा प्रभु-हुक्म में विचरण करना चाहिए। प्रभु का नाम-सिमरन करना चाहिए, क्योंकि मानव जन्म बहुत अनमोल है और शबद मुक्ति पाने का अमूल्य स्रोत है :

जौ राजु देहि त कवन बडाई ॥
जौ भीख मंगावहि त किआ घटि जाई ॥१ ॥
तूं हरि भजु मन मेरे पदु निरबानु ॥
बहुरि न होइ तेरा आवन जानु ॥ (पन्ना ५२५)

वास्तव में प्रभु-भक्ति ही मानव को सच्ची जीवन-जाच सिखाती है। भक्ति करने से मानव के अंदर से विकारों की मैल खत्म हो जाती है और वह गुणों का धारक हो जाता है। भक्त नामदेव जी ने बाणी में मानव को उपदेश दिया है कि प्रभु-प्राप्ति के लिए जंगलों में जाने की ज़रूरत नहीं, बल्कि पवित्र गृहस्थ जीवन में विचरण करते हुए प्रभु-भक्ति करनी चाहिए। ऐसी भक्ति जो गृहस्थ जीवन में की जाए, मानव को सदाचारक जीवन जीने और व्यभिचार से मुक्त होने की प्रेरणा देती है। उन्होंने बाणी में संकेत किया है कि मानव जाति से नीच नहीं होता, बल्कि मानव नीच तब होता है जब वह व्यभिचार करता है। ऐसा मानव, जो पवित्र गृहस्थ जीवन से संतुष्ट न होकर पर-नारी के साथ सम्बंध बनाता है, वह व्यभिचारी है। ऐसे मानव को भक्त नामदेव जी अंधा कहकर उसके अस्तित्व की क्षण भंगुरता की तरफ संकेत करते हैं :

घर की नारि तिआगै अंधा ॥
पर नारी सिउ घालै धंधा ॥
जैसे सिंबलु देखि सूआ बिगसाना ॥
अंत की बार मूआ लपटाना ॥ (पन्ना ११६४)

''भक्त नामदेव जी की नैतिकता आध्यात्मिक धरातल के साथ जुड़ी हुई मानवीय निकटता पैदा करती है। उनकी नैतिकता आत्मिक उन्नति की ओर प्रेरित करती है।''[५]

उन्होंने मानव को तीर्थ-स्नान, पुण्य-दान, यज्ञ-पूजा आदि कर्म-कांडों का त्याग कर केवल प्रभु-नाम-सिमरन करने की शिक्षा दी है :

बानारसी तपु करै उलटि तीरथ मरै अगनि दहै काइआ कलपु कीजै ॥
असुमेध जगु कीजै सोना गरभ दानु दीजै
राम नाम सरि तऊ न पूजै ॥१ ॥
छोडि छोडि रे पाखंडी मन कपटु न कीजै ॥
हरि का नामु नित नितहि लीजै ॥

(पन्ना ९७३)

भक्त नामदेव जी की बाणी में स्पष्ट है कि मानव को वहमों-भ्रमों से मुक्त होकर केवल नाम-सिमरन करना चाहिए। यही मानव का असली धर्म है :

हरि हरि करत मिटे सभि भरमा ॥
हरि को नामु लै ऊतम धरमा ॥ (पन्ना ८७४)

भक्ति को जीवन का अंतिम उद्देश्य मानने वाले भक्त नामदेव जी ने वास्तव में जीवन की अंदरूनी गहराई को ही अभिव्यक्ति दी है और उसमें मानव-कल्याण, लोक-मंगल की भावना स्पष्ट रूप से गूंजती है।''[६]

भक्त नामदेव जी ने अपनी बाणी में मानव को प्रभु के सच्चे भक्त बनने का आदेश दिया है। उनका निजी अनुभव मानव का मार्गदर्शन करता है कि प्रेमा-भक्ति द्वारा परमात्मा को वश में किया जा सकता है। प्रभु द्वारा उत्पन्न माया से मानव तो आज़ाद हो सकता है परंतु सच्ची प्रभु-भक्ति के आगे परमात्मा भी बेबस हो जाता है। हर मानव को शुभ कर्म कर नाम-सिमरन के माध्यम से प्रभु के सच्चे भक्त बनना चाहिए, क्योंकि सच्चे भक्त पर प्रभु हमेशा मेहरबान रहता है :

मेरी बांधी भगतु छडावै बांधै भगतु न छूटै मोहि ॥

(पन्ना १२५२)

भक्त नामदेव जी की बाणी मानव को शुद्ध जीवन-नीति देने वाली परोपकारी बाणी है, जो निरंतर मानवीय मन को सही दिशा दे रही है। भक्त जी की बाणी केवल मध्यकालीन मानव के लिए ही नहीं बल्कि आज के मानव के लिए भी कल्याणकारी साबित होती है, यदि मानव अपने मन-मंदिर में गुरबाणी की विचार करे और बाणी में दिए गए सिद्धांतों को रोज़मर्रा की जिंदगी में व्यवहारिक रूप से इस्तेमाल करे।

हवाले-टिप्पणियां :

१. डॉ. शमीर सिंघ (संपा.), भगत नामदेव : जीवन ते रचना, पृष्ठ १०.
२. डॉ. ब्रह्मजगदीश, परम संत नामदेव, पृष्ठ २७.
३. आचार्य रामचंद्र शुक्ल, हिंदी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ ९५.
४. Prabhaker Machue, Namdev : Life and Philosophy, Page 40.
५. डॉ. शमीर सिंघ (संपा.), भगत नामदेव : जीवन ते रचना, पृष्ठ २४.
६. प्रो. हरमीत सिंघ (संपा.), बाणीकार : भगत नामदेव, पृष्ठ ९०.

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की पृष्ठभूमि

*-डॉ. परमवीर सिंघ**

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ऐतिहासिक गुरुधामों का प्रबंध करने वाली सिक्खों की शिरोमणि और महत्वपूर्ण संस्था है, जिसने अपने आरंभिक समय से ही अनेक उतराव-चढ़ाव देखे हैं। सिक्खों की चढ़दी कला और कुर्बानियों ने इसे हमेशा सजीव रूप प्रदान करने वाली भूमिका निभाई है। संसार के धर्मों में यही एकमात्र ही ऐसी विलक्षण संस्था है जो लोकतांत्रिक ढंग से चुनी जाती है, इसलिए इस पर वे भी नियम लागू कर लिए जाते हैं जो लोकतंत्रीय प्रणाली में ज़रूरी समझे जाते हैं। लंगर, विद्या और स्वास्थ्य सुविधाएं प्रदान करने वाली सिक्खों की यह सिरमौर संस्था जहां लोक-कल्याण एवं परोपकार के कार्यों के लिए हमेशा यत्नशील रहती है, वहीं इसकी कार्यशैली पर किंतु-परंतु करने वालों की भी कोई कमी नहीं है। लोकतांत्रिक प्रणाली द्वारा अस्तित्व में आई यह संस्था आम लोगों के नज़दीक और सीधे संपर्क में है, जिस कारण इसकी कार्य-प्रणाली में प्रवेश करने वाली छोटी से छोटी कमी भी दिखाई देने लग जाती है। आम लोगों के नज़दीक होकर उनकी समस्याओं के प्रति संवेदना प्रकट करनी और उनके समाधान के लिए अपने स्रोतों का प्रयोग करने में यह संस्था हमेशा फ़ख्र महसूस करती रही है मौजूदा समय में करोना महामारी के दौरान इस संस्था ने अपने सीमित साधनों के माध्यम से जो उदारता प्रकट की है, उसकी चारों ओर प्रशंसा हो रही है। एक सदी पहले अस्तित्व में आई इस संस्था की पृष्ठभूमि नयी पीढ़ी के लिए प्रेरणा-स्रोत है। पृष्ठभूमि की घटनाए ही नयी पीढ़ी में इस संस्था के प्रति सम्मान और आत्माभिमान पैदा करने में सहायक सिद्ध हो सकती हैं। नये युग के सम्मुख नयी पीढ़ी में अपनी संस्थाओं के प्रति श्रद्धा, दृढ़ता और विश्वास कैसे पैदा हो, भले यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न है और इसका सुचारू हल ढूँढने जाने की ज़रूरत है, परंतु श्री गुरु अमरदास जी का यह वचन समूह नानक नाम-लेवा सिक्खों के लिए सकारात्मक दृष्टि से हमेशा प्रेरणा-स्रोत बना रहता है :

बाबाणीआ कहाणीआ पुत सपुत करेनि ॥

(पन्ना ९५१)

इस संस्था को बनाने, बचाने और सुचारू रूप से चलाने के लिए हमारे बुज़ुर्गों ने जो मुसीबतें झेली हैं, वे कथन से बाहर हैं। समूह गुरसिक्खों का एक ही आशय था कि गुरुधामों का प्रबंध एक ऐसी संस्था द्वारा होना चाहिए जो गुरु-आशय और आदर्शों की धारक हो। इसी वेदना में से शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का जन्म हुआ है। इसकी पृष्ठभूमि में वे समूह घटनाएँ मौजूद हैं, जिन्होंने सिक्खों के मन में उदासी की भावना पैदा हो जाने के बावजूद भी चढ़दी कला वाली प्रेरणा बनाए रखी।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की पृष्ठभूमि में उन हालातों और घटनाओं के दीदार होते हैं जो किसी कौम को हराने या दबाने के कारण पैदा होते हैं। इन

**सिक्ख विश्व कोश विभाग, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला—१४७००२, फोन : ९८७२०-७४३२२*

घटनाओं की जानकारी प्राप्त करने के लिए सतलुज की हदबंदी को समझना बहुत ज़रूरी है। सतलुज के इस पार की समूह रियासतें अंग्रेज़ों के अधीन थी। समूह रियासतों के राजाओं का यह प्रमुख उद्देश्य था कि वे अपने अधीन जनता का अंग्रेज़ों के हित में इस्तेमाल करें और यदि कोई अवज्ञा करता है तो उसे दबाने में सहायक सिद्ध हों। अंग्रेज़ों की वफ़ादारी के अनेक तमगे और ख़िताब हासिल करने वाले सिक्ख सरदार, राज-घराने एवं फ़ौजी जवान मौजूद थे, जिनके शौर्य का लोहा अंग्रेज़ ख़ुद भी मानते रहे। दूसरी तरफ़ शुक्करचक्किया मिसल के अधीन सतलुज के पार एक ऐसी शक्तिशाली रियासत कायम हो गई थी, जिसके साथ अंग्रेज़ों को भी संधि करने के लिए मजबूर होना पड़ा था। महाराजा रणजीत सिंघ ने ऐसे हालात पैदा कर दिए थे कि जो हमलावर अफगानिस्तान की तरफ से आते थे, अब वे काबुल की गद्दी पर बैठने से पहले महाराजा की मंजूरी लेने लगे थे। महाराजा रणजीत सिंघ का ही शासन-काल ऐसा था जहां विदेशी लोग भी नौकरी करने में ख़ुशी महसूस करते थे। महाराजा के अधीन पंजाब की आर्थिकता ने दुनिया का ध्यान अपनी तरफ खींचा था। महाराजा रणजीत सिंघ ने पंजाब के लोगों में पंजाबियत की भावना पैदा की थी और समूह धर्मों को बराबर का सम्मान देकर शासन के भाईचारक रिश्ते को मज़बूत करने में महत्वपूर्ण योगदान डाला था।

बहुत-से गुरुधाम महाराजा रणजीत सिंघ के अधिकार-क्षेत्र में मौजूद थे, जिनमें श्री गुरु नानक देव जी का प्रकाश-स्थान श्री ननकाणा साहिब, ज्योति-जोत स्थान श्री करतारपुर साहिब, श्री हरिमंदर साहिब, श्री अमृतसर साहिब आदि प्रमुख थे। गुरुधामों में निरंतर चलने वाले लंगर का प्रबंध दृढ़तापूर्वक करने के लिए उन्होंने गुरुधामों के नाम जागीर लगवाई, जिनका प्रबंध प्रमुख रूप से उदासी या निरमले संतों के हाथ में था। महाराजा रणजीत सिंघ के निधन के बाद अंग्रेज़ों को पंजाब पर काबिज़ होने में लगभग १० साल लगे। १८४९ ई. में पंजाब पर कब्ज़ा करने के पश्चात यहां की प्रत्येक संस्था का प्रबंध अंग्रेज़ों के अधीन आ गया, जिनमें गुरुधामों का प्रबंध भी शामिल था। अंग्रेज़ों ने गुरुधामों के प्रबंध की तरफ विशेष ध्यान दिया, क्योंकि ये उनके प्रमुख विरोधी पक्ष सिक्खों की शक्ति का केंद्र थे। अंग्रेजों ने अपरोक्ष रूप से गुरुधामों का प्रबंध अपने हाथों में लेने की बजाय परोक्ष रूप से इनमें हस्तक्षेप करना शुरू कर दिया।

जब से अंग्रेज़ भारत में दाख़िल हुए थे, उस समय से ही उनको भारत की धार्मिक संस्थाओं के प्रबंध में रुचि पैदा हो गई थी। अंग्रेज़ों ने भारत के लोगों की धार्मिक आस्था का गंभीर अध्ययन कर यह निष्कर्ष निकाला कि यदि भारत पर शासन करना है तो यहां के धार्मिक स्थानों का प्रबंध करना पड़ेगा। इस कार्य के लिए उन्होंने एक एक्ट तैयार किया। इस एक्ट का नाम रखा गया— 'Religious Endownment Act, 1863.' पहलें यह काम 'Board of Revenue, Regulation XIX, 1810' के अधीन था। १८६३ के एक्ट XX के अधीन यह सुझाव दिया गया कि मंदिर, मस्जिद आदि हर एक धार्मिक अदारे का प्रबंध इस एक्ट के अनुसार किया जायेगा। चढ़ावे में आई वस्तुएँ, धन और जागीर के सुयोग्य इस्तेमाल करने हेतु यह एक्ट अस्तित्व में आया था। यह एक्ट धर्म-स्थानों के प्रबंध में आ रही बेनियमियों को दूर करने के लिए तैयार किया गया था। इस एक्ट के अधीन समूह शक्तियां ज़िला जज या डिप्टी कमिशनर के पास थीं, जो कि निर्धारित

नियमानुसार धार्मिक स्थानों का प्रबंध करने के पाबंद थे।

पंजाब में सिक्खों के धर्म-स्थानों का प्रबंध करने के लिए अलग कानून बनाया गया। यह भारत में चल रहे १८६३ के एक्ट XX से अलग था। अंग्रेज़ों की इस नीति पर टिप्पणी करते हुए Ian J.Kerr कहता है :—

Why, we must ask, did the British in the Punjab perceive the Sikhs as such a special group that quite contrary to the practice throughout the remainder of British India, they felt that the Provincial Government had to remain involved in the affairs of a Sikh religious institution, the Darbar Sahib? We must also ask how this continuing involvement of Government affected the Sikh community in their struggle to maintain and strengthen their identity.[1]

श्री हरिमंदर साहिब के प्रबंध के लिए अंग्रेज़ों ने दस्तूर-उल-अमल तैयार करवाया, जिसमें यहां सेवा करने वाले समूह रागियों, ग्रंथियों, पुजारियों, महंतों आदि की जिम्मेदारियां निर्धारित करने के साथ-साथ यदि इनमें कोई विरोध पैदा हो जाये तो उसे दूर करने के लिए नियम तैयार किये गए। यह ऐसा दस्तावेज़ था जिसे तैयार करने के लिए उस समय के राजाओं, सरदारों, सूझवानों और संस्थाओं की सहायता ली गई थी। यह ऐसा दस्तावेज़ तैयार किया गया था जिसका उल्लंघन करने पर अदालत में अपील हो सकती थी। इस समय एक और महत्वपूर्ण फ़ैसला लेते हुए श्री हरिमंदर साहिब के प्रबंध के लिए अमृतधारी सिंघों की एक नौ-सदस्यीय कमेटी बनाई गई, जिस पर सरकार की तरफ से एक सरबराह नियुक्त किया गया। सरबराह का काम कमेटी के कामों की केवल निगरानी करना था। समूचे प्रबंध को सुचारू रूप से चलाना और दान-भेंट का हिसाब-किताब रख कर उसे आवश्यकतानुसार ख़र्च करना कमेटी की ज़िम्मेदारी थी। सरकार द्वारा गुरुधामों के प्रबंध के लिए बनाई गई नीति कारगर साबित हो रही थी, जिसकी पुष्टि लेफ्टिनेंट गवर्नर द्वारा वाय सराय को ८ अगस्त, १८८१ ई. को लिखी एक चिट्ठी से होती है[2] :—

Simla
8 August, 1881

My dear Lord Rippon,

I think it would be politically dangerous to allow the arrangement of Sikh Temples to fall into the hands of a committee emancipated from Government control, and I trust your Excellency will assist to pass such orders in the case as will enable to continue the system which has worked our succesfully for more than thirty years.

Believe me,

Yours Sincerely
R.E. Egerton

१९वीं सदी के चौथे दशक में कमेटी को भंग कर सभी शक्तियां सरबराह को सौंप दी गईं :

About 1883, however, the committee was quietly dropped and the whole control came to be vested in the Sarbrah, who received his instructions from the Deputy Commissioner.[3]

कमेटी की शक्तियां सरबराह के पास आने से गुरुद्वारा प्रबंध में वह सबसे ज्यादा शक्तिशाली हस्ती के रूप में उभर कर सामने आया। गुरुधाम में कार्यशील समूह सेवादारों की नियुक्ति और उन्हें बरख़ास्त करने की शक्ति इसके पास आ गई थी, जिस कारण समूचा स्टाफ इसके आदेश के अनुसार कार्य करता था। शक्तिशाली होने के कारण सरबराह में बहुत-सी

कुरीतियां प्रवेश कर गईं। गुरुधामों का प्रबंध दिनो-दिन बिगड़ने लगा, जिससे आम लोगों की श्रद्धा और विश्वास को चोट लगती थी। श्री हरिमंदर साहिब सिक्खों का केंद्रीय स्थान था और श्रद्धालु यहां के सरबराह की ज्यादतियों से तंग आने लगे थे। गुरुधाम का प्रबंध ढीला होने के कारण यहां बहुत-सी कुरीतियां प्रवेश कर गई थीं, जिसका प्रभाव सिक्ख समाज में दिखाई देने लगा था।

सिक्खों में सिक्खी के प्रति प्रेम, दृढ़ता और विश्वास में निरंतर पतन आ रहा था, जिसके परिणामस्वरूप सिक्ख नौजवानों का झुकाव अंग्रेज़ों की तरफ होने लगा। धन और ताकत के सुमेल से अंग्रेज़ समूचे समाज में आदर्श बनते जा रहे थे। नौजवानों के मन में यह बात पक्की होने लगी थी कि अंग्रेज़ों की सहायता से ही उनके आगे बढ़ने के सपने साकार हो सकते हैं। अंग्रेज़ों की जीवन-जाच ने सिक्ख नौजवानों को इतना प्रभावित किया कि सबसे पहली घटना, जिसने समूची सिक्ख कौम को जगा दिया था, श्री अमृतसर में देखने को मिली। १८७३ ई. में श्री अमृतसर सिक्ख मिशन के चार सिक्ख विद्यार्थियों— आइआ सिंघ, अतर सिंघ, साधू सिंघ और संतोख सिंघ द्वारा सिक्ख धर्म को छोड़ कर ईसाई धर्म में प्रवेश कर जाने के एलान ने समूचे सिक्ख पंथ की भावनाओं को झंझोड़ कर रख दिया था। इससे पहले अंग्रेज़ों ने पंजाब के आख़िरी महाराजा दलीप सिंघ को ईसाई धर्म में तबदील कर इंग्लैंड भेज दिया था और इसके बाद १८६२ ई. में कपूरथले के राजा का भतीजा कुँवर हरनाम सिंघ ईसाई धर्म में प्रवेश कर गया था। श्री अमृतसर मिशन स्कूल के सिक्ख विद्यार्थियों की स्वेच्छा से ईसाई धर्म में प्रवेश करने के एलान ने बुद्धिमान सिक्खों के मन में यह भावना प्रकट की कि सिक्ख कौम में गुरमति भावनाओं का संचार करने के लिए तुरंत यत्नशील होने की ज़रूरत है। इसी प्रभाव के अधीन सरदार ठाकर सिंघ संधावालिया के नेतृत्व में सिंघ सभा की स्थापना हुई। चाहे सिंघ सभा से पहले निरंकारी और नामधारी लहरों ने भी सिक्खों में धार्मिक जागृति पैदा करने का कार्य किया था, मगर सिंघ सभा की विशेषता थी कि इनकी प्रमुख सुर शैक्षणिक थी। ये चाहते थे कि आधुनिक विद्या के माध्यम से सिक्ख विद्यार्थियों में दुनियावी और शैक्षणिक चेतना पैदा करने के सार्थक निष्कर्ष सामने आ सकते हैं। ये अंग्रेज़ सरकार के साथ किसी तरह का भी विरोध पैदा किये बिना सिक्ख बच्चों को सिक्खी और पंजाबी के साथ जोड़ने के इच्छुक थे। ये चाहते थे कि अंग्रेज़ अधिकारियों को भी सिक्ख धर्म की मर्यादा और परंपरा का ज्ञान होना चाहिए। सिंघ सभा के प्रमुख उद्देश्यों का वर्णन करते हुए गोबिंद सिंघ मनसुखानी लिखते हैं :—

The main aim of the founders of the Singh Sabha Movement was to discover the glorious heritage of Sikh faith and tradition by imparting the necessary knowledge to the younger generation and inspiring them with high moral standards of conduct so that they may become the best models of the community. Education of the community was necessary and therefore the establishment of schools and the production of religious literature were undertaken in a big way. The leaders were also aware of evils that had crept in the social customs and religious practices of the Sikhs and by setting personal examples weaned the masses of the corrupting practices.[4]

सिंघ सभा ने सिक्खों में धार्मिक जागृति की जो लहर आरंभ की थी, उसके सार्थक निष्कर्ष सामने आने आरंभ हो गए। सिक्ख जनसंख्या वाले नगरों में सिंघ सभाओं की स्थापना का कार्य आरंभ हो गया। सिंघ सभाओं में तालमेल पैदा करने के लिए ख़ालसा दीवान अस्तित्व में आए। १८८३ ई. में ख़ालसा दीवान श्री अमृतसर सामने आया, जिससे ३६ सिंघ सभाएं सम्बन्धित हुईं। १८८६ ई. में ख़ालसा दीवान श्री अमृतसर में कुछ सैद्धांतिक मतभेद पैदा हो गए और इनमें से ख़ालसा दीवान लाहौर पैदा हो गया। सिक्खी के गौरव को स्थापित करने के लिए ख़ालसा दीवान लाहौर ने बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य किये। इनमें से ज्ञानी दित्त सिंघ द्वारा आरंभ किया गया 'ख़ालसा अख़बार' प्रमुख था। १८८६ ई. में आरंभ हुए इस अख़बार ने सिक्खों में गुरमति चेतना पैदा करने का महत्वपूर्ण कार्य किया। ख़ालसा दीवान लाहौर की प्रसिद्धि दूर-दूर तक फैल गई और यह सिक्खों में धार्मिक जोश तथा विश्वास पैदा करने में काफ़ी हद तक सफल भी हुआ।

उन्नीसवीं सदी के अंत तक इस दीवान के दो प्रमुख नेता सर अतर सिंघ और सरदार गुरमुख सिंघ अकाल प्रस्थान कर गए थे। १९०१ ई. में ज्ञानी दित्त सिंघ के अकाल प्रस्थान कर जाने से यह दीवान बहुत कमज़ोर पड़ गया था। १९०२ ई. में चीफ़ ख़ालसा दीवान श्री अमृतसर और ख़ालसा दीवान लाहौर को इकठ्ठा कर चीफ़ ख़ालसा दीवान की स्थापना की गई। भाई अरजन सिंघ बागड़ियां इसके प्रधान चुने गए। स्कूल खोलना, गुरबाणी और गुरु-इतिहास की किताबें छपवाना, पंजाबी भाषा का प्रचार व धार्मिक चेतना पैदा करना आदि इसके प्रमुख कार्य थे। इसकी मीटिंगों में हुए फ़ैसलों से पता चलता है कि पंजाब से बाहर गुरुधामों के प्रबंध के लिए भी ये सहायता प्रदान करते रहे हैं। १९३४ ई. में आए भूकंप के बाद तख़्त श्री हरिमंदर जी पटना साहिब की इमारत को भारी नुकसान पहुँचा था। मूलभूत रूप से उसकी मरम्मत और फिर उसके पुनर्निर्माण में भी चीफ़ ख़ालसा दीवान का महत्वपूर्ण योगदान है।

'साप्ताहिक ख़ालसा एडवोकेट' इनकी महत्वपूर्ण प्रकाशना है, जिसके माध्यम से इन्होंने गुरमति का संदेश और सिद्धांत आम लोगों तक ले जाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। सिक्ख शैक्षणिक कान्फ्रेंस के माध्यम से इस संस्था ने सिक्ख बच्चों और नौजवानों में सिक्खी प्रेरणा पैदा करने का कार्य करने के साथ-साथ बुद्धिमान गुरसिक्खों को एक-दूसरे के निकट लाकर संवाद रचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिस पर टिप्पणी करते हुए प्रो. गुरबचन सिंघ तालिब बताते हैं :—

''सिक्ख शैक्षणिक कान्फ्रेंस में कौम के शिरोमणि नेता, धार्मिक प्रचारक, विद्या मारतंड, ज्ञानवान और अध्यापक शरीक होते रहे हैं। विचारों में कौम की शैक्षणिक और सांस्कृतिक समस्याओं की तरफ आकर्षित किया गया है, जिससे समय-समय पर कौम की समझ परिपक्व होती रही है।''[५].

यह संस्था अंग्रेज़ सरकार के साथ मिल कर कार्य कर रही थी। चाहे इस संस्था के माध्यम से सिक्खों में विद्या के प्रचार-प्रसार को भारी समर्थन प्राप्त हुआ और इसने सिक्खों की हिंदुओं से अलग पहचान स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, परन्तु यह संस्था गुरुधामों के प्रबंध को सुधारने में कोई ठोस कार्य न कर सकी और न ही यह संस्था सिक्खों के राजसी हितों को पूरा करती थी।

सिंघ सभा के प्रभावाधीन सिक्खों में अपने धर्म के

सिद्धांतों के प्रति जो चेतना पैदा हुई थी, उसी में से गुरुधामों के प्रबंध के सुधार के लिए विचार पैदा होने लगे थे। गुरुधामों के प्रबंध में जो विकार उनको नज़र पड़ते थे, उनके प्रति सिक्ख संगत में जागरूकता पैदा करने के लिए अखबारों एवं पत्रिकाओं का सहारा लिया जाने लगा था। गुरुद्वारा प्रबंध के बिगाड़ की जो बात समूची संगत के हृदय को ठेस पहुँचा रही थी, उसकी वेदना का दिखावा स. गिआन सिंघ वजीराबाद ने इन शब्दों में बयान किया है:

साध संगत नूं धक्के मिलदे,
चोरां नाल पिआरा, खेल निआरा।
पर त्रिय गामी होइ महंतन,
करदे ख़ुशी अपारा, रात किनारा।
जाइदाद बनाई जद्दी,
ख़ौफ़ संगत दा टारा, ख़ुद मुखतिअरा।[६]

जिन गुरसिक्खों के मन में गुरुधामों की पवित्रता का दर्द मौजूद था, उन्हें दोहरी लड़ाई लड़नी पड़ रही थी। एक तरफ़ वे अपने धर्म में प्रवेश कर गई कुरीतियों को दूर करने के लिए यत्नशील थे और दूसरी तरफ़ वे बाहरी हमलों से अपने गुरुधामों को बचाने के लिए निरंतर कार्य कर रहे थे। सिक्खों के मन में श्री हरिमंदर साहिब और इसके परिसर के प्रति श्रद्धा-भावना मौजूद होने के कारण जब कोई इसकी बेअदबी करने का यत्न करता है तो ये इसकी सुरक्षा के लिए अपने-आप को कुर्बान करने के लिए भी तैयार हो जाते हैं। ऐसी एक घटना उस समय देखने को मिलती है जब श्री हरिमंदर साहिब के नज़दीक गुरुद्वारा श्री संतोखसर साहिब के सरोवर में नाव चलाने की सरकारी तजवीज़ सामने आई। इस घटना का जो विवरण अखबारों में छपा वह इस प्रकार है :—

''सिक्ख कौम का अपने धार्मिक स्थानों के प्रति लापरवाह होने का नतीजा है कि म्युंसिपल कमेटी के दिल में भी सिक्ख धार्मिक स्थानों की बेअदबी करने की हिम्मत बढ़ती जा रही है। हाल ही में म्युंसिपल कमेटी श्री अमृतसर में यह तजवीज़ पेश हो रही है कि 'संतोखसर' में नाव चलाने का प्रबंध किया जाये। वो क्यों? इसलिए कि एक धार्मिक शहर के गुंडों और लोफरों के लिए नाव में बैठ कर सैर करने का स्थल बन जाये। हम श्री अमृतसर की म्युंसिपल कमेटी से पूछते हैं कि उसे ऐसा करने का क्या हक हासिल है? वह दिमाग़, जिसमें यह फ़िजूल और निकम्मी तजवीज़ पैदा हुई थी, इस सच्चाई से अवगत नहीं कि सरकार की पालिसी किसी धर्म में दख़ल देने की नहीं? क्या धार्मिक सरोवर को सैरगाह बनाने की तजवीज़ सरकार की पालिसी के विरुद्ध नहीं? जिस दिन यह तजवीज़ कमेटी के अधिवेशन में पेश हुई, उस दिन सिक्ख तथा अन्य प्रेमी सदस्यों ने इसकी सख़्त विरोधता की और आखिर यह फ़ैसला हुआ कि डॉक्टर सत्यपाल और चौधरी दया सिंघ को यह फ़र्ज़ सौंपा गया कि वे इस मामले से संबंधित पड़ताल रिपोर्ट पेश करें।''[७]

यह स्थिति तब पैदा होती है जब गुरमति आदर्श वाला राष्ट्रीय जीवन कमज़ोर हो जाये, गुरु का हुक्म केवल सुनहरी अक्षरों में तो लिखा मिले परंतु सिक्ख-हृदयों में उसका निवास न हो सके, अमीरी का अहंकार गरीब भाइयों पर भारी पड़ने लग जाये। पंजाब में ऐसी स्थिति पैदा हो गई थी कि रियासती अमीरों, जागीरदारों और राजाओं-महाराजाओं ने अन्य मतावलंबियों को अपने घर में स्थान देने के लिए गुरु जी द्वारा बताए सिद्धांतों का त्याग करना आरंभ कर दिया था। जंग के मैदान में जो ख़ालसा पंथ को हरा न सके, धर्म के मार्ग पर वे सेंध लगाने में सफल हो गए

थे। इससे संबंधित १९०२ ई. के 'खालसा समाचार' में छपी यह महत्वपूर्ण ख़बर पंथ की दशा के बारे में जानकारी प्रदान करती है :—

''नम्रतापूर्वक विनती है कि किरानियों और मुहम्मदियों का जोर सिंघ पुर गांव के आस-पास ज्यादा ही हो गया है, क्योंकि जो उनकी यहां मस्जिदें और दो अमेरिकन मिशन हैं जो लोगों को प्रेरित कर रहे हैं। इसका यह कारण है कि इस इलाके में कोई धर्मशाला नहीं है और ग्रामीण ख़ालसा जी को अपने धर्म का ज़रा कम ख़्याल है।''[४]

पंजाब में ईसाई मिशन का आरंभ १८५२ ई. में हुआ। इंग्लैंड के दो पादरी टी. एच. फिटज़पैट्रिक और राबर्ट क्लार्क ने श्री अमृतसर में यह मिशन आरंभ किया था। अंग्रेज़ कहते थे कि लाहौर पंजाब का सिर और श्री अमृतसर इसका दिल है। इन दोनों स्थानों पर उन्होंने अपने मिशन स्थापित किये परन्तु मुख्य केंद्र श्री अमृतसर को बनाया।[५]

एक तरफ़ अंग्रेज़ मिशनरियों का ज़ोर लगा हुआ था, दूसरी तरफ़ आर्य समाज वाले गुरु साहिबान के प्रति नकारात्मक टिप्पणियाँ कर पंथ में दुविधा पैदा कर रहे थे। एक अकाल पुरख के पुजारियों को श्री हरिमंदर साहिब के चौगिर्दे में मूर्तियों की पूजा की तरफ लगाया जा रहा था। सरबराह के कामों में पंथक सुर कहीं नज़र नहीं आ रही थी। चौतरफा हो रहे हमलों का मुकाबला करने की बजाय सारा ध्यान अंग्रेज़ों के प्रति वफ़ादारी दिखा कर उनको ख़ुश करने के लिए ही लगाया जा रहा था। १९१४ ई. में कामागाटामारू जहाज़ की घटना ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अंग्रेज़ सरकार द्वारा भारतीय लोगों के साथ की जा रही ज्यादतियों का ध्यान अपनी तरफ खींचा था। इस समय श्री हरिमंदर साहिब का सरबराह अरूड़ सिंघ था। इस घटना में अंग्रेज़ सरकार का दोगला चेहरा बेनकाब हो गया था। बाबा गुरदित्त सिंघ अंग्रेज़ों की भारत-विरोधी नीति को संसार के सामने प्रकट करने के लिए कामागाटामारू जहाज़ लेकर पहले हाँगकाँग से कनाडा गया था और लगभग दो महीने कनाडा की बंदरगाह पर रुकने के पश्चात वापस भेज दिया गया। इस जहाज़ में ३७६ मुसाफ़िर सवार थे, जिनमें से ९० प्रतिशत से ज्यादा सिक्ख थे और जहाज़ में ही उन्होंने श्री गुरु ग्रंथ साहिब का प्रकाश किया हुआ था।

जब यह जहाज़ वापस कलकत्ता पहुँचा तो अंग्रेज़ सिपाहियों ने मुसाफ़िरों पर गोली चला कर लगभग २० मुसाफ़िरों को शहीद कर दिया। इस हमले में कई लोग ज़ख़्मी भी हो गए थे। अंग्रेज़ सरकार अपनी गलतियों पर पर्दा डाल कर सारी बात मुसाफ़िरों पर फेंकना चाहती थी। श्री हरिमंदर साहिब के सरबराह अरूड़ सिंघ ने इस काम में अंग्रेज़ों का साथ देते हुए श्री अकाल तख़्त साहिब से हुकमनामा जारी किया कि कामागाटामारू जहाज़ के मुसाफ़िर सिक्ख नहीं थे। इस हुकमनामे की पुष्टि १२ अक्तूबर, १९२० ई. को जारी हुए हुकमनामे से होती है, जिसमें स्पष्ट किया गया कि ''श्री अकाल तख़्त साहिब पर सजा ख़ालसा जी का यह दीवान पारित करता है कि जिन्होंने बजबज घाट पर अंग्रेज़ों का मुकाबला किया था, वे गुरु के सिक्ख हैं। वे गुरु के सिक्ख नहीं हैं जो अपने घर में पाप-लीला करते हैं। अरूड़ सिंघ, जो गुरमति प्रचार को बंद कर घर में पाप-लीला करता है, यह गुरु का सिक्ख नहीं।''[६]

कामागाटामारू जहाज़ की घटना १९१४ ई. में घटी थी, जब अरूड़ सिंघ ने जहाज़ के मुसाफ़िरों के ख़िलाफ़ हुकमनामा जारी किया था। इसके बाद दूसरी बड़ी घटना गुरुद्वारा रकाबगंज साहिब से संबंधित थी।

१९१३ ई. में दिल्ली में गुरुद्वारा रकाबगंज के सामने वायसराय की कोठी (मौजूदा राष्ट्रपति भवन) बनाने का कार्य आरंभ हुआ तो आर्किटेक्ट ने देखा कि वायसराय की कोठी को जाने के लिए जो सड़क तैयार करनी है, गुरुद्वारा रकाबगंज साहिब की दीवार उसकी ख़ूबसूरती पर धब्बा है। उसके सुझाव पर गुरुद्वारा साहिब की दीवार गिरा दी गई। पहला विश्व-युद्ध आरंभ होने पर चाहे यह संघर्ष कुछ समय के लिए मुलतवी कर दिया गया, परन्तु युद्ध ख़त्म होने पर सिक्खों का ध्यान फिर गुरुद्वारा साहिब की दीवार बनाने पर केंद्रित हो गया। इस कार्य में स. सरदूल सिंघ कवीशर ने प्रमुख भूमिका निभाई थी। उसने दीवार के निर्माण के लिए १०० ऐसे नौजवानों की माँग की जो इस कार्य के लिए अपना आप कुर्बान कर सकने का जज़्बा रखते थे। ७०० सिक्खों ने इस कार्य के लिए अपने नाम लिखवाए थे। १९२० ई. में उसी जगह पर दीवार बनाने से मसला तो हल हो गया परन्तु सिक्खों के मन में अंग्रेज़ों के प्रति नकारात्मक भावनाएं ज़ोर पकड़ गई थीं।

इसी संदर्भ में तीसरी बड़ी घटना जलियां वाला बाग़ में घटी। वैसाखी के अवसर पर यहां बड़ी संख्या में लोग इकट्ठा हुए, जिनमें से बहुत-से सिक्ख थे। जनरल डायर ने यहां इकट्ठा हुए सैकड़े लोगों पर गोली चला कर उन्हें शहीद कर दिया। इतने बड़े साके की गूँज बहुत दूर तक गई, परंतु अरूड़ सिंघ और श्री हरिमंदर साहिब के पुजारियों ने जनरल डायर को सिरोपा देकर सारा ध्यान अपनी तरफ आकर्षित कर लिया। देश-विदेश में बसते हर गुरसिक्ख के मन में सरबराह के प्रति नफ़रत पैदा हो गई थी।

सरबराह के प्रबंध अधीन जो विशेष त्योहार मनाए जाते थे, उनमें ऐसी कुरीतियां प्रवेश कर गई थीं, जो गुरमति सिद्धांत के बहुत ही प्रतिकूल थीं। ब्राह्मणी रीतियों में मूर्ति-पूजा का रिवाज़ था, जो कि गुरुद्वारों तक पहुंच चुका था। जात पात और ऊंच नीच को कमियों कमज़ोरियों से गुरु साहिबान ने सिक्खों को दूर किया था, सिक्ख उसी की तरफ मुड़ने आरंभ हो गए थे। तथाकथित निम्न जातियां ख़ालसा भाईचारे का अटूट अंग थी, जिन्हें शूद्र होने का एहसास करवाया जा रहा था।

ऐसी एक घटना ख़ालसा बिरादरी के माध्यम से देखने को मिलती है। ख़ालसा बिरादरी पिछड़ी जातियों की नुमाइंदगी करती थी। इन्होंने रामदासिया तथा पिछड़ी श्रेणियों में से बहुत-से लोगों को अमृत छकाकर सिंघ सजा लिया था। अक्तूबर १९२० ई. में ख़ालसा बिरादरी ने जलियां वाला बाग़ में एक दीवान आयोजित किया, जिसमें ख़ालसा कॉलेज के विद्यार्थियों और कुछ अध्यापकों ने हिस्सा लिया था। विभिन्न तथाकथित निम्न जातियों सें संबंधित बहुत-से लोग इस दीवान में अमृत छक कर सिंघ सज गए थे। जब वे श्री हरिमंदर साहिब में कड़ाह प्रसाद भेंट करने गए तो वहां के पुजारियों ने तथाकथित निम्न जातियों से संबंधित लोगों में से सिंघ सजे ख़ालसे की भेंट और उनकी अरदास करनी स्वीकार न की, जिस पर झगड़ा अधिक बढ़ गया। इस खींचतान को ख़त्म करने के लिए श्री गुरु ग्रंथ साहिब में से हुकमनामा लेने की सहमति बनी। जब हुकमनामा लिया गया तो श्री गुरु अमरदास जी की ये पंक्तियां सामने आईं— ''निगुणिआ नो आपे बखसि लए भाई सतिगुर की सेवा लाए ॥ सतिगुर की सेवा ऊतम है भाई राम नामि चितु लाइ ॥'' गुरु साहिब की ये पंक्तियां सम्मानहीन लोगों को सम्मान प्रदान करने की तरफ साफ़ संकेत करती हैं।

गुरु साहिब का यह हुक्म ग्रहण करने के पश्चात् ख़ालसा बिरादरी वाला समूचा जत्था श्री अकाल तख़्त साहिब पर दर्शन करने गया तो वहां के पुजारी तख़्त साहिब से खिसक गए। श्री अकाल तख़्त साहिब की सेवा-संभाल के लिए तुरंत फ़ैसला लेते हुए स. तेजा सिंघ भुच्चर को तख़्त साहिब का जत्थेदार नियुक्त कर एक २५ सदस्यों की कमेटी का गठन कर दिया गया। इस कमेटी में लिए सदस्यों के लिए केवल ख़ालसे की मर्यादा का पालन करने की शर्त थी जिसमें स्पष्ट तौर पर बताया गया है कि ख़ालसा पदवी धारण करने वाले की पिछली कुल, कर्म तथा धर्म का नाश हो गया है और वह अकाल पुरख के बिना किसी की अधीनता स्वीकार नहीं करता। सिक्ख जगत में इस घटना का बहुत महत्व है, क्योंकि यह घटना गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर का आधार बनी थी।

अंग्रेज़ डिप्टी कमिशनर को जब इस घटना का पता चला तो उसने १३ अक्तूबर, १९२० ई. को मीटिंग बुला कर नये सरबराह के अधीन एक कमेटी का गठन कर दिया।[११]. सुधारवादी सिक्खों ने इस सारी घटना पर विचार करने के लिए १५ नवंबर, १९२० ई. को सिक्खों की एक आम सभा बुलाई जिसके दो दिन पहले १३ नवंबर, १९२० ई. को सरकार ने महाराजा पटियाला की सलाह से एक ३६-सदस्यीय कमेटी का गठन कर दिया। श्री हरिमंदर साहिब और इसके आस-पास के गुरुद्वारों का प्रबंध इस कमेटी को सौंपा गया। सिक्खों में फूट डालने के सरकारी मंसूबे को फेल करते हुए सुधारवादियों ने बुलाई सभा में सरकार द्वारा बनाई ३६-सदस्यीय कमेटी को शामिल कर १७५-सदस्यीय कमेटी का गठन कर दिया, जिसका नाम 'शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी' रखा गया।

हवाला-सूची :

१. Ian J. Kerr, The British and the administration of the Golden Temple in 1859, in The Panjab: Past and Present, ed. by Ganda Singh, Volume-X, Part I-II, (April and October 1976), pp. 316-17.

२. नाराइण सिंघ एम. ए., गुरुद्वारा सुधार लहर, पृष्ठ १८.

३. The Gurdwara Reform Movement and The Sikh Awakening (1922), p. 140.

४. Gobind Singh Mansukhani, Singh Sabha Movement - Retrospect and Prospect, in The Sikh Sansar, September 1974, p. 78.

५. गुरबचन सिंघ तालिब, सिक्ख विद्यक (शैक्षणिक) कान्फ्रेंस एक महान संस्था, खालसा एडवोकेट, श्री अमृतसर, १९ फरवरी, १९६८, पृष्ठ २.

६. पंथ सेवक, श्री अमृतसर, १८ अगस्त १९२०, पृष्ठ १.

७. पंच, लाहौर, १४ ज्येष्ठ, संवत् नानकशाही ४५१ (१९२०), पृष्ठ २.

८. खालसा समाचार, श्री अमृतसर, २५ जून १९०२, पृष्ठ ६.

९. If Lahore is the head, then Amritsar is the heart of the Punjab. If Lahore is the political capital, as regards European influence, Amritsar is the social capital, as regards purely native influence. If Lahore attracts all who have anything to do with or anything to hope for from Government, Amritsar attracts all who are specially concerned with everything that is purely native. The Church Missionary Society has its Missions in both Amritsar and Lahore. Amritsar is the chief station and the headquarter of the work in the whole Punjab. Robert Clark, The Missions of the Punjab and Sindh, (1904), p. 19.

१०. नरैण सिंघ, अकाली मोरचे ते झब्बर, पृष्ठ ६५.

११. Ajit Singh Sarhadi, Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee, in The Encyclopaedia of Sikhism, Ed.-in-Chief Harbans Singh, vol. IV, p. 115.

धर्म प्रचार की प्रमुख संस्था : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी

*-डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ **

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की स्थापना गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर से हुई। इस संस्था का मूल मनोरथ गुरुद्वारों की संभाल और प्रबंध गुरु-मर्यादा के अनुसार करना था। किसी भी संस्था की कामयाबी उसके ओहदेदारों और सदस्यों के किरदार पर टिकी होती है। संस्था के उद्देश्य कितने भी ऊँचे क्यों न हों अगर उसके अगुआ गुणवान और दृढ़ संकल्प वाले न हों तो उस संस्था का पतन होते देर नहीं लगती। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की बुनियाद आस्था और समर्पण के महान सिक्खी आदर्शों पर रखी गई। गुरु-घरों का प्रबंध जितने पतन पर जा पहुँचा था, यह धारणा बन चुकी थी कि प्रबंध के लिए सिक्ख ही नहीं बल्कि रहितवंत (चरित्रवान) सिक्ख चाहिए। गुरुद्वारों के प्रबंध के लिए एक नुमाइंदा कमेटी के चयन के लिए १५ नवंबर, १९२० ई. को एक महान पंथक सम्मेलन श्री अकाल तख़्त साहिब के सामने बुलाया गया। इसमें सम्मिलित होते के लिए सभी सक्रिय सिक्ख संस्थाओं को अपने नुमायंदे भेजने के लिए अपील की गई। पंथक सम्मेलन में शामिल होने वाले नुमाइंदे कौन हो सकते हैं यह भी पहले से ही तय कर दिया गया। यह पाबंदी लगाई गई कि नुमाइंदे अमृतधारी हों, पांच बाणियों का नितनेम करने वाले हों, पांच ककारों के पक्के धारक हों, अमृत वेले जागने वाले हों और गुरु-हुक्मानुसार दसवंध निकालने वाले हों। यह एक अद्वितीय निर्णय था। आज तक ओहदेदारों की योग्यताओं के बारे में चाहे सोचा जाता रहा हो, परंतु ओहदेदारों का चयन करने वाले नुमाइंदों की योग्यताओं के बारे में पहली बार इतनी गहराई और भावना के साथ सोचा गया था। यह श्रेष्ठ लोकतंत्र की सबसे बेहतरीन मिसाल थी।

आज आम तौर पर हर देश की सरकार लोकतांत्रिक प्रणाली से चुनी जाती हैं, जो पूरा देश संभालती हैं, परन्तु चयन करने वाले— मतदाता बनने के लिए कोई ख़ास पैमाने नहीं बने हैं। वोट देने को जन्म-सिद्ध अधिकार मान लिया गया है। सिक्ख पंथ आम धारा में शामिल होने वाला पंथ कभी नहीं रहा। श्री गुरु नानक साहिब के काल से सिक्ख पंथ ने अपनी न्यारी और पवित्र सोच पर सख्त पहरा दिया है। सिक्खों में बलिदान व त्याग का जज़्बा इसी सोच से पैदा और प्रफुल्लित होता रहा है। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के गठन के पीछे भी यही संकल्प

*ई-१७१६, राजाजी पुरम, लखनऊ-२२६०१७, फोन : ९४१५९-६०५३३ , ८४१७८-५२८०९

काम कर रहा था। १५ नवंबर को पंथक सम्मेलन में १७५ सदस्य चुने गए। इसके बाद भी चुने गए सिक्खों की रहित (आचरण) की समीक्षा हुई। पांच प्यारों को इसकी जिम्मेदारी सौंपी गई। यह केवल रस्म अदायगी नहीं थी। पाँच प्यारों ने पूरी गंभीरता के साथ अपना फर्ज निभाया। दिलचस्प बात यह रही कि इन पाँच प्यारों के बारे में भी संगत सचेत थी। पाँच प्यारों में शामिल प्रो. तेजा सिंघ के बारे में कहा गया कि ये अपने आपको संत कहलवाते हैं और माथा भी टिकवाते हैं। प्रो. तेजा सिंघ ने अपनी गलती मानते हुए श्री अकाल तख़्त साहिब के समक्ष एलान किया कि वे अब न तो आपने आपको संत कहलवाएंगे और न ही किसी से माथा टिकवाएंगे। अपने नेताओं की रहित, आचरण और सोच के प्रति इतनी गंभीरता आज हैरान कर सकती है, मगर यह गंभीरता ही सिक्खी का सच्चा चेहरा और चरित्र थी। गुरबाणी का हुक्म है कि तख़्त का हकदार वही है जो तख़्त के लायक है। यह हुक्म मात्र किसी ओहदे, ज़िम्मेदारी या ख़ास स्थिति के लिए नहीं पूरे मानवीय जीवन का मार्ग-दर्शन करता है। जीवन में गुण, निर्मल सोच और पवित्र आचार है, तो ही गुरसिक्खी है। पूरी गुरबाणी निर्मल जीवन-अवस्था सृजित करने का सिद्धांत है। खालसा की सृजना करते समय दशम पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने भी सन् १६९९ ई. की वैसाखी वाले दिन खालसा के ककारों के साथ रहित की भी बात की थी। रहित के बिना सिक्ख पूरा नहीं होता। सिक्ख का पूरा जीवन, पूरा समय, दिन-रात, हर पल का आचरण रहित के साथ बंधा हुआ है। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की आधारशिला भी इसी विचार पर रखी गई। जब आधारशिला पक्की हो तो इमारत की मज़बूती की चिंता नहीं करनी पड़ती। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की राह में भी आए दिन अवरोध आते रहे, परंतु टिक न सके, क्योंकि सोच व्यापक और उदार थी। कमेटी की कार्य-शैली एक प्रबंधक कमेटी की न रह कर सिक्खी भावनाओं की तरजमानी करने वाली संस्था के रूप में उभरती गई। दरअसल शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का गठन समय की ज़रूरत थी। सवाल केवल गुरुद्वारों के प्रबंध का ही नहीं था सिक्खी सिद्धांतों का मूल स्वरूप कायम रखने का भी था। श्री हरिमंदर साहिब का निर्माण स्वयं श्री गुरु अरजन साहिब ने करवाया था और उसके समक्ष श्री अकाल तख़्त साहिब का निर्माण श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने करावाया था। इस कारण श्री अमृतसर, श्री दरबार साहिब सिक्खी का केंद्र बन कर उभरा। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का केंद्र भी श्री अमृतसर ही बना। किसी भी स्थान का प्रबंध करना अलग बात है और धर्म प्रचार का कार्य अलग मिशन है। ये दोनों काम साथ-साथ आगे चलाना बहुत कठिन कार्य था, जो शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने कर दिखाया। प्रबंध, प्रबंध जैसा नहीं धार्मिक मिशन बन गया और धर्म-प्रचार, मात्र प्रचार-कार्य नहीं धर्म की

चढ़दी कला का प्रबंध बन गया। गुरु साहिब के समय में ही धर्म प्रचार की एक व्यवस्थित योजना अस्तित्व में आई थी। मंजियां (प्रचार-केंद्र) स्थापित की गईं। मुख्य केन्द्रों में मसंद लगाए गए। सारे काम करने की एक मर्यादा थी। जब पहले गुरु-घर के रूप में श्री हरिमंदर साहिब बना तो इसकी भी मर्यादा अस्तित्व में आई। सारे प्रबंध और मर्यादा का एक ही उद्देश्य था कि गुरु-शबद का संदेश एक-एक मानव तक पहुँचे और हर मानव का जीवन गुरु-हुक्म से प्रेरणा प्राप्त कर परमात्मा की शरण और कृपा के योग्य बने। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने इसी सोच को धारण किया। सरदार सोहण सिंघ जोश ने अपनी किताब 'अकाली मोर्चों का इतिहास' (पंजाबी) में लिखा है कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का स्थापित होना बहुत ही बड़ा संगठित कदम था। इसने सिक्खों की बिखरी हुई ताकत को एक जगह पर इकट्ठा और मज़बूत कर दिया। इससे सारी मुश्किलें भी ख़त्म हो गईं। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के फ़ैसले पूरे पंथ के फ़ैसले माने जाने लगे और अमल में आने लगे। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने जल्दी ही फ़ैसले न मानने वालों के खिलाफ कदम उठाने की ताकत भी हासिल कर ली। आम सिक्ख, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी को सम्मान और भय के साथ देखने लगे। यह इस कारण संभव हो सका क्योंकि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की बागडोर आस्थावान सिक्खों के हाथ में थी और धार्मिक मर्यादा बनाए रखना उनकी प्राथमिकता थी। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी धार्मिक भावनाओं के साथ भरी हुई थी। आस्था और भावना का सदा ही समाज में सम्मान होता आया है।

आज जब भी सिक्ख जगत के सामने कोई सवाल खड़ा होता है या कोई भ्रम जन्म लेता है तो वह आशा भरी निगाह से एकमात्र शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की तरफ ही देखा जाता है, क्योंकि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने आरंभ से ही जितना ध्यान गुरुद्वारों के प्रबंध की तरफ लगाया उतना ही सिक्खी सिद्धांतों के प्रचार में भी दिया। श्री हरिमंदर साहिब के परिसर में सराय वाली दिशा से प्रवेश करते समय पहला अदारा 'गुरमति लिटरेचर हाऊस' दिखाई देता है। इस दुकान में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी तथा इसकी धर्म प्रचार कमेटी द्वारा प्रकाशित लगभग सभी लिटरेचर मिल जाता है। इसे प्रशासनिक संयोग कहा जा सकता है, परंतु श्री हरिमंदर साहिब के दर्शन से पहले गुरमति अध्ययन का अवसर प्राप्त होना एक सुखद संयोग है। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने धर्म प्रचार पर पूरा ध्यान देने के लिए अलग धर्म प्रचार कमेटी बनाई है। धर्म प्रचारक तैयार किये जा रहे हैं। धार्मिक विषय पर पुस्तिकाएं, ग्रंथ प्रकाशित किये जा रहे हैं जो देश ही नहीं विदेश में भी पहुंच रहे हैं। बड़े से बड़े लेखक भी सिक्ख धर्म पर कोई किताब लिखते हैं तो शिरोमणि

गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी से पांडुलिपि की पड़ताल करवा लेते हैं। यहां सिक्ख इतिहास रिसर्च बोर्ड की प्रशंसा किये बिना नहीं रहा जा सकता जो सिक्ख इतिहास को प्रमाणिक बनाने के लिए बहुमूल्य योगदान दे रहा है। कोई लिखित अगर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने प्रकाशित की हो या प्रकाशित करने की सहमति दी हो तो सिक्ख जगत उसे बिना किसी आशंका के स्वीकार कर लेता है। यह प्रतिष्ठा बनाना बड़ा कठिन काम था और प्रतिष्ठा एक दिन में या केवल बातों से ही नहीं बनती, इसके लिए समर्पण, मेहनत और ईमानदारी की ज़रूरत होती है।

श्री हरिमंदर साहिब में आए रोज़ाना के हुकमनामे को जानने के लिए पूरे सिक्ख जगत की जिज्ञासा बनी रहती है। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी रोज़ाना का हुकमनामा विश्व स्तर पर प्रसारित करती है और गुरुद्वारा श्री मंजी साहिब से हुकमनामे की कथा-विचार पूरी कौम को प्रेरित करने का काम करती है। इस कथा-विचार का एक-एक शब्द मायने रखता है। ठीक है कि यह श्री हरिमंदर साहिब की महत्ता के कारण है, परंतु इस महत्ता को बनाए रखने में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का योगदान भी अपनी ख़ास स्थान रखता है।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने क्या नहीं किया और क्या करना चाहिए, इसकी चर्चा अक्सर सुनने में आती है, मगर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी जो कर रही है अगर उसे तन्मयता से जानने का यत्न करें तो यह चर्चा फीकी पड़ जायेगी। हर बात का प्रचार मुमकिन नहीं। धर्म प्रचार की ज़मीनी हकीकत को देखते हुए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने कई वर्ष पहले हिंदी भाषा में एक मासिक पत्रिका 'गुरमत ज्ञान' प्रकाशित करना शुरू किया। इसका मकसद था कि बहुत-से सिक्ख और ग़ैर-सिक्ख, जो पंजाबी नहीं पढ़ सकते, वे हिंदी में गुरमति संबंधी ज्ञान प्राप्त कर सिक्खी सिद्धांतों को समझ सकें। 'गुरमत ज्ञान' के शुरूआती दौर में इस लेख के लेखक के लेखों की एक शृंखला 'गुरसिक्खी बारीक है' शीर्षक तले प्रकाशित हुई थी। यह कहना कि पाठकों को यह शृंखला बहुत पसंद आई यह महत्वपूर्ण नहीं है, महत्वपूर्ण यह है कि इस शृंखला के सिलसिलेवार लेखों से प्रभावित होकर जयपुर की एक सिक्ख विद्वान और लेखिका ने अपने घर श्री गुरु ग्रंथ साहिब का प्रकाश करने का फ़ैसला किया। यह बात जानकारी में न आती, अगर उन्होंने 'गुरमत ज्ञान' के संपादक साहिब को चिट्ठी लिख कर यह न बताया होता और वह चिट्ठी 'गुरमत ज्ञान' में छापी न गई होती। कितने ही सिक्ख, ग़ैर-सिक्ख 'गुरमत ज्ञान' के पाठक हैं, कितने ही लोग 'गुरमत ज्ञान' के माध्यम से सिक्खी सिद्धांतों से प्रभावित हो रहे हैं, इस बारे में कोई बाकायदा अध्ययन नहीं किया गया है, परंतु इससे इनकार भी नहीं किया जा सकता।

धार्मिक साहित्य और प्रचार के क्षेत्र में पंजाबी

में प्रकाशित होने वाले 'गुरमति प्रकाश' का कोई जोड़ ही नहीं दिखाई देता। 'गुरमति प्रकाश' ने धार्मिक लेखन में जो प्रतिष्ठा बनाई है उसके आस-पास कोई नज़र नहीं आता। यह सदा के लिए संभाल कर रखने योग्य पत्रिका है। इसके वर्षों पुराने अंकों में प्रकाशित लेख अन्य मैगजीनों में अक्सर पढ़ने को मिल जाते हैं। 'गुरमति प्रकाश' ने कुछ वर्ष पूर्व श्री गुरु ग्रंथ साहिब के विभिन्न पक्षों पर विशेष अंक सिलसिलेवार प्रकाशित किये थे। इन अंकों में श्री गुरु ग्रंथ साहिब संबंधी दुर्लभ और बहुमूल्य जानकारी एक जगह पर एकत्रित मिलती है। 'गुरमति प्रकाश' के पुराने अंकों के चुनिंदा लेखों का संग्रह भी प्रकाशित किया गया है, जो इस क्षेत्र में काम कर रहे प्रमुख लोगों की अपनी ज़िम्मेदारी के प्रति गंभीरता दिखाता है। यह गंभीरता तभी पूर्ण प्रभावकारी हो सकती है जब सारा सिक्ख जगत अपनी ज़िम्मेदारी समझे। हर गुरसिक्ख के घर 'गुरमति प्रकाश' तथा 'गुरमत ज्ञान' आता हो तो समर्पित धर्म-प्रचारकों का हौसला बढ़ता है तथा कुछ और श्रेष्ठ करने की भावना जन्म लेती है। घर में ये पत्रिकाएं आएं भी और पढ़ी भी जाएं। गुरमत कथा-विचार कितने ही उच्च स्तर की क्यों न हो, अगर सुनी ही न जाए तो उसका कोई लाभ नहीं।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की धर्म प्रचार कमेटी भविष्य के लिए आदर्श सिक्ख कौम तैयार करने में सबसे अहम योगदान डाल रही है।

संसार के सभी धर्मों के अंदर कोई न कोई ऐसी सत्ता है जिसका निर्णय सभी के लिए शिरोधार्य होता है। सिक्ख पंथ में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी को यह सम्मान प्राप्त है, जो लोकतांत्रिक ढंग से चुनी गई संस्था है। इसका धर्म-प्रचार करने का ढंग भी सर्वहितकारी है। रागी सिंघ, प्रचारक , धार्मिक साहित्य, अमृत संचार आदि प्रचार मुहिम के ख़ास स्तंभ हैं। अमृत संचार समागम लगातार पूरे देश में चलते रहते हैं और इन समागमों की बाकायदा रिपोर्ट प्रकाशित की जाती है। धर्म प्रचार कमेटी की तरफ से द्विवर्षीय सिक्ख धर्म अध्ययन पत्राचार कोर्स चलाया जा रहा है। यह कोर्स पंजाबी, हिंदी और अंग्रेज़ी तीन भाषाओं में कराया जाता है, जिसकी फीस नाममात्र है। इसका सिलेबस सिक्ख इतिहास और फलसफे का प्रमाणिक ज्ञान देने वाला है। यह कोर्स हर उम्र के सिक्ख के लिए योग्य है। धर्म के प्रति विश्वास के साथ ही धर्म के सिद्धांतों का ज्ञान भी हो तो विश्वास स्थिर हो जाता है और भावना दृढ़ होती है। सिक्ख धर्म संबंधी प्रारंभिक जानकारी एकत्रित करना इस कोर्स ने आसान कर दिया है। जैसे हर सिक्ख के लिए अमृत-पान करना लाज़िमी माना गया है वैसे ही इस कोर्स को सिक्खी के मार्ग पर चलने की प्राथमिक ज़रूरत के तौर पर देखा जाए तो पंथ की चढ़दी कला नयी ऊँचाइयां छू सकती है। गुरु साहिबान ने सिक्ख पंथ को 'शबद' के साथ

जोड़ा है। दशम पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब को गुरुआई पर विराजमान किया। जिस कौम ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब की अधीनता स्वीकार की हो उस कौम की पहचान पूर्ण समर्पित और परम विद्वान कौम के रूप में होना चाहिए।

धर्म प्रचार कमेटी द्वारा प्रकाशित एक किताब है— 'सिक्ख फेथ'। इसके लेखक डॉ. गुरबखश सिंघ हैं। किताब में सवाल-जवाब के रूप में वो सारी जानकारी मिल जाती है जिसके बारे में जानने की जिज्ञासा हर सिक्ख के मन में रहती है। यह किताब हर सिक्ख को पढ़नी चाहिए। दिलचस्प बात है कि यह किताब नि:शुल्क है। ऐसी अन्य बहुत-सी किताबें हैं जो आम सिक्ख के लिए और सिक्ख धर्म संबंधी खोज करने वालों के लिए लाभदायक हैं। सबसे ज़्यादा सवाल सिक्ख के मन में 'रहित मर्यादा' को लेकर होते हैं। आम सिक्ख का इस बारे में बहुत अल्प ज्ञान है कि 'रहित मर्यादा' क्या है और किसने तैयार की। बहुत-से पुरातन रहितनामे मिलते हैं, जिनमें विभिन्न रहितों का वर्णन मिलता है। रहितों के बारे में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का ख़ास हवाला दिया जाता है। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने सबसे महान कार्य किया— 'सिक्ख रहित मर्यादा' तैयार कर। इसके लिए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने एक रहु-रीति (प्रकिया) सब-कमेटी बनाई थी, जिसमें २५ सदस्य थे। इस सब कमेटी ने सन् १९३२ ई. में एक पांडुलिपि तैयार की जिस पर पूरे पंथ ने व्यापक विचार किया। विभिन्न विद्वानों, संस्थाओं से परामर्श किया गया। लंबे विचार-विमर्श के बाद सन् १९३६ ई. में सर्वसम्मति से 'सिक्ख रहित मर्यादा' अस्तित्व में आई। सन् १९४५ ई. में इसमें संशोधन किया गया। गुरमत के अनुसार एक सिक्ख का रहन-सहन क्या है, श्री गुरु ग्रंथ साहिब, गुरुद्वारा साहिब का सम्मान क्या है, सिक्ख के जीवन-मरण के संस्कार क्या हैं के अलावा जिंदगी के रोजमर्रा के नियम, साधारण पाठ, अखंड पाठ, कथा, कीर्तन आदि मर्यादाएं भी इसमें शामिल हैं। सिक्ख रहित मर्यादा शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की बहुत ही महत्वपूर्ण और सम्मानित देन है। सिक्ख रहित मर्यादा पुस्तिका के रूप में छापी गई है जो नि:शुल्क वितरित की जाती है।

सिक्ख पंथ में अन्य कोई और संस्था नहीं जिसने धर्म प्रचार के लिए इतने बड़े स्तर पर बहुपक्षीय काम किये हों। धर्म प्रचार की मुहिम दिनो-दिन तेज होती जा रही है। हर सिक्ख का फर्ज है कि इस मुहिम में ईमानदारी के साथ अपना योगदान दे। अगर हम शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी से कोई आशा रखते हैं तो अपने आपको इस महान संस्था के साथ जोड़े रख कर, इसके प्रति सम्मान प्रकट कर, इसके द्वारा सिक्ख समाज के लिए किये जा रहे कल्याणकारी कार्यों की प्रशंसा करनी होगी।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के 100 वर्षीय स्थापना दिवस के परिप्रेक्ष्य में

– *डॉ. अमरजीत कौर इब्बण कलाँ**

आज से १०० वर्ष पहले सिक्खों की सर्वोच्च संस्था शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की स्थापना हुई थी। यह सर्वोच्च संस्था सिक्खों को आसानी से नहीं मिली थी। इसे अस्तित्व में लाने के लिए सिक्खों को बड़े संघर्ष करने पड़े, सिर-धड़ की बाज़ी लगानी पड़ी, अनेक कुर्बानियां देनी पड़ीं, फिर कहीं जाकर सिक्खी-आस्था ने अपना रंग दिखाया और गुरुद्वारों की सेवा-संभाल के लिए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी अस्तित्व में आई।

कुदरत का नियम है कि हर कार्य करने के पीछे कोई न कोई कारण होता है। जितना बड़ा कार्य उतना बड़ा ही कारण होता है। इस महान संस्था की स्थापना की पृष्ठभूमि पर भी नज़र डालने की ज़रूरत है।

हमारे दस गुरु साहिबान ने इस धरती को 'बे-गम पुरा' बनाने का संकल्प लिया था। उन्होंने प्राणी-मात्र के दुख निवारण करने के लिए गुरुद्वारे बनाए, सरोवर तैयार किए, संगत-पंगत प्रदान की, जहां कोई भी बिना किसी जाति भिन्न-भेद के लंगर छक सके, स्नान कर सके, गुरबाणी सुन सके, प्रभु की याद में जुड़ सके, मानसिक और शारीरिक तृप्ति के पश्चात समाज की भलाई के लिए तैयार रह सके।

अठारहवीं सदी में इस आदर्श की पूर्ति के लिए सिक्खों ने सफल संघर्ष किया। पंजाब की धरती *''देगो तेग़ो फतह नुसरत बेदरंग। याफत अज नानक गुरू गोबिंद सिंघ।''* के जयकारों से गूँज उठी। पंजाब में अहंकारे मुग़ल बादशाह खालसयी जाहो-जलाल के सामने ध्वस्त हो गए। इस धरती पर सत्ता कायम कर सिक्ख राजा-महाराजा बने। जो राजा-महाराजा बने उन्होंने गुरुद्वारों की सेवा-संभाल में तन-मन-धन से योगदान दिया। समय ने करवट ली, गुरुद्वारों पर महंतों और पुजारियों का कब्जा हो गया। उन्नीसवीं सदी के अर्ध में सिक्खों के तख़्तो-ताज ख़त्म हो गए। अंग्रेज़ों के शासन का दौर आरंभ हो गया और गुरु-घर लोभी पुजारियों की निजी जायदाद बन गए। अंग्रेज़ों ने अपने कानून के अधीन गुरु-घर की संपत्ति को महंतों और पुजारियों की मलकियत करार देकर सुलग रही आग पर तेल डालने का काम किया। इन पुजारियों के ब्राह्मणी रीति-रिवाज, जात-पांत का प्रभाव सिर चढ़ बोलने लगा। इज्जत-आबरू के रक्षक गुरुधाम ऐय्याशी का अड्डा बन गए। पुजारी हर तरह की कुरहित करने लगे। सिक्खों में आक्रोश था। वे बेबस थे, क्योंकि इन लोगों को सरकारी समर्थन पूरी तरह से प्राप्त था।

नीच प्रवृत्ति वाले लोग सरेआम गुरु सिद्धांत की धज्जियाँ उड़ा रहे थे। गुरु-सिद्धांत— *''मानस की जाति सभै एकै पहिचानबो''* के प्रतिकूल एक मनुष्य दूसरे मनुष्य को अछूत कह उक्त गुरु-सिद्धांत की निरादरी कर रहा था। इसके विरुद्ध सिक्खों में

**गांव एवं डाकखाना : इब्बन कलाँ, झबाल रोड, श्री अमृतसर-१४३००९; फोन : ९७८०६-३५१९७*

आक्रोश भर उठा। १२ अक्तूबर, १९२० ईस्वी को तथाकथित अछूत जातियों में से सजे सिंघों ने कड़ाह प्रसाद की देग लेकर श्री दरबार साहिब श्री अमृतसर में भेंट करने के लिए खालसयी वीरता के साथ भाई महिताब सिंघ 'बीर' की जत्थेदारी में प्रस्थान किया। जब संगत श्री दरबार साहिब पहुँची तो पुजारियों ने पहले तो देग स्वीकार करने से मना कर दिया, फिर संगत देख कर घबरा गए। जुबानी-कलामी हुई तकरार के बाद भयभीत पुजारियों ने संगत के इस सुझाव को स्वीकार कर लिया कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब का हुकमनामा ले लिया जाए और हुकमनामे की रौशनी में कड़ाह प्रसाद की देग स्वीकार या अस्वीकार की जाए। हुकमनामा लिया गया। उस समय श्री गुरु अमरदास जी का पवित्र फरमान राग सोरठि महला तीजा दुतुकी पन्ना ६३८ से प्राप्त हुआ :

निगुणिआ नो आपे बखसि लए भाई
सतिगुर की सेवा लाइ ॥
सतिगुर की सेवा ऊतम है भाई
राम नामि चितु लाइ ॥

सारी संगत 'धन्य गुरु अमरदास जी! धन्य गुरु रामदास जी! कहने लगी। कड़ाह प्रसाद बिना किसी भेदभाव से वितरित होना शुरू हो गया। यह ख़बर मिलते ही श्री अकाल तख़्त साहिब के पुजारी श्री अकाल तख़्त साहिब छोड़ कर भाग गए। संगत ने श्री दरबार साहिब से लौट कर श्री अकाल तख़्त साहिब आकर अभिवादन किया। मीरी-पीरी के दोनों स्थानों की सेवा-संभाल के लिए आरज़ी तौर पर प्रबंधक लगाए गए। भाई तेजा सिंघ भुच्चर को जत्थेदारी फर्ज़ निभाने के लिए नियुक्त कर दिया। उस समय १५ नवंबर, १९२० का दिन निश्चित कर समूह सिक्ख संगत को श्री अकाल तख़्त साहिब पर एकत्रित होने का न्यौता दिया गया, ताकि गुरुधामों की सेवा-संभाल के लिए प्रतिनिधियों का चयन किया जा सके, प्रबंध का स्थायी आधार बनाया जाये। पंथक सभा निश्चित समय एवं स्थान पर हुई। समूह सिक्ख संगत द्वारा गुरु-मर्यादा के मुताबिक १७५ अमृतधारी और रहितवान सिंघों की प्रबंधक कमेटी चुन ली गई और इस कमेटी को शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की संज्ञा दी गई। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का पहला प्रधान बनने का सम्मान सरदार सुंदर सिंघ मजीठिया को प्राप्त हुआ। भविष्य के हालात को महसूस करते हुए उन्नतिशील विचारों वाले सिक्खों ने १४ दिसंबर, १९२० ई. को श्री अकाल तख़्त साहिब पर दूसरी सभा बुलाई। इस सभा का उद्देश्य यह था कि राजसी और सामाजिक क्षेत्र में चल रहे संघर्ष का मुकाबला करने के लिए जुझारू सिंघों की जत्थेबंदी कायम की जाये। इस सभा में शिरोमणि अकाली दल का आधार निश्चित किया गया। शिरोमणि अकाली दल के प्रधान बनने का सम्मान सरदार सरमुख सिंघ झबाल के हिस्से आया। इस तरह एक महीने के अंदर-अंदर १९२० ई. में गुरु-पंथ की दोनों प्रमुख जत्थेबंदियाँ— शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी और शिरोमणि अकाली दल गुरुद्वारों की सेवा-संभाल के लिए तथा राजसी एवं सामाजिक क्षेत्र में पंथ-दोखियों के विरुद्ध जूझने के लिए कायम हो गईं।

संघर्ष-काल (१९२०- १९२५) इस नयी स्थिति में महंतों और पुजारियों ने अंग्रेज़ सरकार से मदद माँगी। मिस्टर किंग कमिशनर लाहौर ने एक पत्र जारी कर महंतों और पुजारियों को विश्वास दिलाया कि अंग्रेज़ सरकार उनके हक-हकूक की रक्षा करने के लिए वचनबद्ध है व उनकी हर तरह से मदद

करेगी। इस प्रकार गुरुद्वारों पर काबिज़ महंत-पुजारी और भी मनमर्जी करने लगे। गुरुद्वारों की किलाबंदी कर हथियार और गुंडे भर्ती कर लिए। वे लोग बेहद अश्लील हरकतों पर उतर आए, क्योंकि वे जानते थे कि अंग्रेज़ सरकार का उनकी पीठ पर हाथ है। इतना ज्यादा अपमान सिक्ख सहन न कर सके। इस प्रकार महंत-पुजारी और सरकार एक तरफ़ तथा शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी दूसरी तरफ़ आमने-सामने खड़े हो गए। दोनों पक्ष खूनी संघर्ष में उतर आए। मोर्चे लगे, साके हुए, छवियां, लाठियां बरसीं। जिंदा सिक्ख जंड (वृक्ष) के साथ बाँध कर जलाए गए, भट्टियों में झोंके गए। गोलियाँ बरसीं और शहादतें हुईं। अंदाज़न पाँच सौ सिंघ शहीद हुए। हज़ारों अपंग होकर नकारा हुए। तीस हज़ार सिंघों ने काल कोठरियों की यातनाएं झेलीं। पंद्रह लाख रुपए से ज्यादा जुर्माने भरे और हज़ारों सिक्खों को सरकारी ओहदों से प्राप्त की गई पेन्शन से हाथ धोने पड़े। सिक्खों की आस्था रंग लाई और अंग्रेज़ सरकार को बार-बार पीछे लौटना पड़ा।

२१ फरवरी, १९२१ ई. को मिस्टर किंग कमिशनर लाहौर को श्री ननकाणा साहिब के साके के पश्चात् गुरुद्वारा जन्म-स्थान की चाबियाँ जत्थेदार करतार सिंघ झब्बर को सबके सामने देनी पड़ीं। इसके बाद दूसरी बार श्री दरबार साहिब की चाबियाँ, जो डिप्टी कमिशनर श्री अमृतसर ने अपने कब्ज़े में की हुई थीं, सिक्खों के घोर संघर्ष के बाद सभी सिक्ख कैदियों को रिहा कर १९ जनवरी, १९२२ ई. को श्री अकाल तख़्त साहिब के सजे दीवान में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के तत्कालीन प्रधान बाबा खड़क सिंघ को सौंपनी पड़ीं। तीसरी बार गुरु का बाग और उस पर गंगसर-जैतो के प्रसिद्ध मोर्चों में हार खाकर गवर्नर पंजाब ने २१ जनवरी, १९२५ ई. को गुरुद्वारा बिल का खरड़ा प्रकाशित कर माना कि पंजाब के ऐतिहासिक गुरुद्वारों के प्रबंध का अधिकार पंजाब में बसते सिक्खों के पास रहना ही उचित है। इस प्रकार पंजाब सरकार जिस कानून की आड़ लेकर महंतों और पुजारियों की पीठ थपथपाती थी, उसे खुद ही नये एक्ट के माध्यम से कानून बदलने के लिए विवश होना पड़ा।

सिक्खों द्वारा बनाई शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने इस बिल को विचारने के लिए २७ अप्रैल, १९२५ ई. को श्री अकाल तख़्त साहिब पर सभा की। आपसी विचार-विमर्श करने के बाद निम्नलिखित तीन संशोधन पेश कर इस बिल की विरोधता न करने का फ़ैसला किया :—

१. श्री अकाल तख़्त साहिब और तख़्त श्री केसगढ़ साहिब शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के पास रहें।

२. सिक्ख महिलाओं को वोट देने का अधिकार हो।

३. गुरुद्वारों की आमदन धर्म, विद्या और दान के लिए ख़र्च हो।

इस प्रकार बिल ९ जुलाई, १९२५ ई. को पंजाब कौंसिल में पेश होकर पास हुआ। पंजाब के गवर्नर ने २८ जुलाई, १९२५ ई. को इस बिल की प्रवानगी दे दी और यह एक्ट १ नवंबर, १९२५ ई. को लागू हुआ।

इन सौ वर्षों में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने सिक्खी के प्रचार और प्रसार में, गुरुद्वारों की सेवा-संभाल में शानदार योगदान दिया है। यह दावे के साथ कहा जा सकता है कि सिक्खों की इस संस्था जैसी दुनिया में अन्य कोई संस्था नहीं है और न ही हो सकती है। इस संस्था की प्रतिष्ठा को बरकरार रखना हम सबका परम धर्म है। ☸

गुरबाणी चिंतनधारा . . . १३३

सिध गोसटि : विचार व्याख्या

*-डॉ. मनजीत कौर**

मन का जीउ पवनु कथीअले
पवनु कहा रसु खाई ॥
गिआन की मुद्रा कवन अउधू
सिध की कवन कमाई ॥
बिनु सबदै रसु न आवै अउधू
हउमै पिआस न जाई ॥
सबदि रते अंम्रित रसु पाइआ साचे रहे अघाई ॥
कवन बुधि जितु असथिरु रहीऐ
कितु भोजनि त्रिपतासै ॥
नानक दुखु सुखु सम करि जापै
सतिगुर ते कालु न ग्रासै ॥६१ ॥ (पन्ना ९४४)

६१वीं पउड़ी में दो बार प्रश्न किए गए हैं और इसी में इन प्रश्नों के उत्तर भी दे दिए गए हैं। आगे ६२वीं एवं ६३वीं पउड़ी में ६१वीं पउड़ी के प्रश्नों का विस्तृत रूप से उत्तर दिया गया है।

इस पउड़ी नें गहन प्रश्न और फिर बहुत ही गहन जवाब देकर जहाँ सिधों की आशंकाओं का निवारण किया है वहीं गूढ़ रहस्यों को सरल शब्दावली में समझा कर कल्याणकारी वचनों से मानवता का मार्गदर्शन किया है।

६१वीं पउड़ी में पहला प्रश्न जो गुरु पातशाह से सिधों ने किया कि मन का आधार (आसरा) प्राण माने जाते हैं, लेकिन प्राणों का आधार क्या है अर्थात् प्राणों को जीवन-रस (खुराक) कहां से प्राप्त होती है? ज्ञान की प्राप्ति का साधन कौन-सा है? योग साधना से सिद्धि प्राप्त कर चुके योगी को क्या प्राप्त हो जाता है?

उपरोक्त प्रश्न का सहज जवाब देते हुए श्री गुरु नानक पातशाह पावन फरमान करते हैं कि हे योगी! पूर्ण गुरु के बिना प्राणों को रस प्राप्त नहीं होता अर्थात् सतिगुरु का शबद ही प्राणों का आधार (आसरा) है। इस आशयानुसार गुरु का शबद ही प्राणों की खुराक है। गुरु-शबद के बिना अहम् (अहंकार) की प्यास नहीं मिटती। शबद में लीन बने रहकर ही अमृत-रस की प्राप्ति सम्भव है। सत्य स्वरूप प्रभु में एक होकर ही तृप्ति बनी रहती है अर्थात् संतोष रूपी प्रवृत्ति बन जाती है।

आगे फिर प्रश्न उठाया है कि वह कौन-सी बुद्धि है जिसके द्वारा मन सदैव स्थिर बना रहता है अर्थात् अडोल रहता है तथा किसी भी परिस्थिति में डगमगाता नहीं? वह कौन-सी खुराक है अर्थात् भोजन है जिसमें मन सदा तृप्त रहता है ?

इन प्रश्नों का उत्तर देते हुए गुरु पातशाह समझाते हैं कि सतिगुरु के मिलाप वाली बुद्धि अर्थात् सच्चे गुरु के माध्यम से दुख-सुख एक समान प्रतीत होते हैं तथा सतिगुरु द्वारा जो नाम रूपी भोजन प्राप्त होता है उसके कारण मौत का भय नहीं सताता।

वास्तव में जब सच्चा गुरु जीवन का आधार बन

**२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, फोन : ९९२९७-६२५२३*

जाता है तो मन की चंचलता खत्म हो जाती है। फिर मनुष्य अपने मन के पीछे लगकर नहीं भटकता, अपितु गुरु-दर्शाये मार्ग पर चल कर जीवन की तमाम उलझनों से बच जाता है, जिसके फलस्वरूप बुद्धि स्थिर हो जाती है वृत्ति संतोषी हो जाती है। दुख और सुख दोनों अवस्था में वह समरूप रहता है। न सुख में आपे से बाहर होकर किसी चीज का अहंकार करता है, न ही दुखों में घबराता है और न ही किसी से शिकायत करता है। हर हाल में प्रभु मालिक की रजा में खुश रहता है। नौवें पातशाह श्री गुरु तेग बहादर जी का फरमान है :

जो नरु दुख मै दुखु नही मानै ॥
सुख सनेहु अरु भै नही जा कै कंचन माटी मानै ॥
(पन्ना ६३३)

यह कमाल की युक्ति गुरु-कृपा से ही मुमकिन है, यथा :

—गुर किरपा जिह नर कउ कीनी
तिह इह जुगति पछानी ॥
नानक लीन भइओ गोबिंद सिउ
जिउ पानी संगि पानी ॥ *(पन्ना ६३३)*
—रंगि न राता रसि नही माता ॥
बिनु गुर सबदै जलि बलि ताता ॥
बिंदु न राखिआ सबदु न भाखिआ ॥
पवनु न साधिआ सचु न अराधिआ ॥
अकथ कथा ले सम करि रहै ॥
तउ नानक आतम राम कउ लहै ॥६२ ॥
(पन्ना ९४५)

६२वीं पउड़ी में श्री गुरु नानक देव जी ने ६१वीं पउड़ी के प्रश्नों का विस्तृत उत्तर दिया है। गुरु पातशाह ने समझाया है कि गुरु-शबद के बिना मनुष्य माया रूपी जाल में उलझ कर हर समय जलता रहता है। प्रभु-प्यार के बिना उसे आनंद की अनुभूति हरगिज नहीं होती। ईश्वर रूप गुरु-शबद का जिसने उच्चारण नहीं किया उसका जप-तप, योग-साधना सब कुछ व्यर्थ है। इसके विपरीत जो व्यक्ति ईश्वर के गुण गायन करते हुए दुख-सुख में एक ही स्थिति में रहता है वही परमेश्वर की प्राप्ति करता है।

गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि जिसका मन हरि-नाम के रंग में नहीं लगा और न ही प्रभु-रस में लीन हुआ वह गुरु-शबद के बिना जलता हुआ हमेशा संतप्त ही रहता है अर्थात् जिस मनुष्य का चित्त प्रभु-नाम में नहीं जुड़ता अथवा जिसे हरि-नाम-रस की अनुभूति नहीं होती। वह जीवन में हर पल दुखों-संतापों में जलता रहता है। जिस मनुष्य ने गुरु-शबद का गायन नहीं किया, उसने यति बन कर भी कुछ नहीं कमाया अर्थात् गुरु-शबद की कमाई के बिना उसने शारीरिक संयम भी नहीं अपनाया। जिसने सत्य स्वरूप प्रभु की आराधना नहीं की मानो उसने कोई प्राणायाम भी नहीं किया अर्थात् प्रभु की आराधना के बिना समस्त क्रियाएं व्यर्थ हैं। अगर मनुष्य प्रभु की अकथनीय कथा को कहता हुआ सुख-दुख में सम अवस्था में रहता है तो श्री गुरु नानक देव जी के चिन्तनानुसार वह अपनी आत्मा में परमात्मा को खोज लेता है।

गुरबाणी में अन्यत्र भी समझाया है कि सत्य स्वरूप ईश्वर के नाम-सिमरन के बिना समस्त क्रियाएं व्यर्थ हैं। प्रभु-प्राप्ति के जितने भी साधन विविध धर्मों में बताए गए हैं उनमें से गुरबाणी

आशयानुसार प्रभु का सिमरन सर्वोत्तम है, जैसा कि पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने सुखमनी साहिब की पावन बाणी में समझाया है :

प्रभ का सिमरनु सभ ते ऊचा ॥
प्रभ कै सिमरनि उधरे मूचा ॥
प्रभ कै सिमरनि त्रिसना बुझै ॥
प्रभ कै सिमरनि सभु किछु सुझै ॥ (पन्ना २६३)

गुरु के शबद की कमाई के बिना सब कुछ व्यर्थ है। गुरु-वचन में इतनी सामर्थ्य है कि उसे न तो जल डुबो सकता है, न ही अग्नि जला सकती है और न ही चोर चुरा सकता है। गुरबाणी-प्रमाण है :

गुर का बचनु बसै जीअ नाले ॥
जलि नही डूबै तसकरु नही लेवै
भाहि न साकै जाले ॥ (पन्ना ६७९)

वस्तुत: सतिगुरु के शबद की कमाई अर्थात् गुरु-शबद के अनुपालन के बिना व्यक्ति धन-दौलत के धंधों में जल-जल कर खीझता हुआ हर पल संतप्त रहता है और इसके विपरीत गुरु-शबद द्वारा प्रभु का सिमरन करता हुआ व्यक्ति हर स्थिति में समान रूप से रहता हुआ अपनी अन्तरात्मा में ही प्रभु को पा लेता है। तब उसे किसी बाहरी कर्मकाण्डों की आवश्यकता नहीं रह जाती।

गुर परसादी रंगे राता ॥
अंम्रितु पीआ साचे माता ॥
गुर वीचारी अगनि निवारी ॥
अपिउ पीओ आतम सुखु धारी ॥
सचु अराधिआ गुरमुखि तरु तारी ॥
नानक बूझै को वीचारी ॥६३ ॥ (पन्ना ९४५)

६३वीं पउड़ी में भी ६१वीं पउड़ी का ही विस्तृत जवाब देते हुए गुरु की अनंत महिमा का गायन करते हुए श्री गुरु नानक देव जी समझाते हैं कि ज्ञान की प्राप्ति का साधन केवल गुरु-शबद ही है। जिसे यह बख्शिश प्राप्त होती है उसकी तृष्णा रूपी अग्नि शांत हो जाती है और उसे आत्मिक आनंद की प्राप्ति हो जाती है।

गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि गुरु की अनुकम्पा से ही जीव प्रभु के रंग में लीन होता है और अमृत-पान कर सत्य में मगन हो जाता है। गुरु-चिन्तन के फलस्वरूप मनुष्य की आन्तरिक अग्नि शांत हो जाती है। वह अमृत-जल पीता है अर्थात् अमृत-पान करता है तथा आत्मिक सुख का धारक बन जाता है अर्थात् उसका हृदय (घर) सदैव आनंद से भरपूर रहता है। गुरमुख बन कर वह सत्य की आराधना करता है, जिसके फलस्वरूप वह संसार सागर से पार उतर जाता है। गुरु पातशाह अंतिम पंक्ति में स्पष्ट करते हैं कि इस गूढ़ रहस्य को कोई विचारशील प्राणी ही समझ सकता है।

गुरबाणी में अन्यत्र भी समझाया है कि गुरु-कृपा के बिना प्रभु-चरणों से प्रीति मुमकिन नहीं और प्रभु-चरणों की प्रीति के बिना तृष्णा की ज्वाला शांत नहीं हो सकती। जिसने गुरु-कृपा से नाम रूपी अमृत पी लिया उसे आत्मिक सुख की प्राप्ति सहज हो जाती है। गुरु-दर्शाये मार्ग पर चल कर ही प्रभु-सिमरन नसीब होता है। कोई विचारवान ही इस गूढ़ तथ्य को समझता हुआ संसार रूपी भवसागर से पार उतरने में सफलता प्राप्त करता है।

वस्तुत: गुरु-कृपा से जिसने अपने निज स्वरूप को पहचान लिया वही हर पल आनंद में रहता है। जिसे गुरु-कृपा से परमेश्वर का नाम याद रहता है वह

ईश्वर का ही रूप हो जाता है। गुरबाणी-प्रमाण है :

—जिन्हा न विसरै नामु से किनेहिआ ॥
भेदु न जाणहु मूलि सांई जेहिआ ॥ (पन्ना ३९७)
—इहु मनु मैगलु कहा बसीअले
कहा बसै इहु पवना ॥
कहा बसै सु सबदु अउधू
ता कउ चूकै मन का भवना ॥
नदरि करे ता सतिगुरु मेले
ता निज घरि वासा इहु मनु पाए ॥
आपै आपु खाइ ता निरमलु होवै
धावतु वरजि रहाए ॥
किउ मूलु पछाणै आतमु जाणै
किउ ससि घरि सूरु समावै ॥
गुरमुखि हउमै विचहु खोवै
तउ नानक सहजि समावै ॥६४॥ (पन्ना ९४५)

६४वीं पउड़ी में योगियों द्वारा पूछे गए रहस्मयी प्रश्नों का सहज एवं सुंदर जवाब देते हुए गुरु जी ने समझाया है कि किस प्रकार मन को वश में किया जाता है, मन की भटकना कैसे दूर होती है, आत्म-तत्व को कैसे समझा जा सकता है और चंद्रमा के घर में सूर्य कैसे ठहर सकता है।

गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि योगियों का प्रश्न था कि यह हाथी जैसा मन कहां बसता है अर्थात् अंकुश रहित हाथी रूपी मन कहां निवास करता है और श्वास रूपी पवन का निवास कहां है? हे अवधूत (योगी) अर्थात् नानक! यह शबद कहां निवास करता है, जिसके फलस्वरूप मन का भटकाव खत्म होता है।

उपरोक्त गहन प्रश्नों का सहज उत्तर देते हुए श्री गुरु नानक देव जी पावन फरमान करते हैं कि अगर ईश्वर की कृपा-दृष्टि (रहमत) हो जाए तो वह सच्चे गुरु से मिला देता है और यह मन अपने मूल स्वरूप में अर्थात् ज्योति में स्थिर हो जाता है अर्थात् जीवात्मा परमात्मा में एक रूप हो जाती है। भ्रम का पर्दा हट जाता है। भटकाव वाली स्थिति नहीं रहती। जब मन में से अहं चला जाता है तो मन समस्त संकल्पों-विकल्पों से मुक्त होकर निर्मल हो जाता है। आगे सिधों द्वारा प्रश्न किया गया कि यह जीव अपने मूल तत्व को कैसे जाने? अपनी आत्मा से कैसे साक्षात्कार करे? किस प्रकार शीतल और चन्द्रमा रूपी अन्तःकरण में सूर्य रूपी ऊर्जा (शक्ति) का प्रवेश हो?

गुरबाणी में अन्यत्र भी मन को ज्योति स्वरूप माना गया है। जीवात्मा और परमात्मा का अंश-अंशी सम्बंध है :

मन तूं जोति सरूपु है आपणा मूलु पछाणु ॥
मन हरि जी तेरै नालि है गुरमती रंगु माणु ॥
(पन्ना ४४१)

इस प्रकार की अवस्था प्राप्त होने पर भक्त कबीर जी पुकार उठते हैं :

राम कबीरा एक भए है कोइ न सकै पछानी ॥
(पन्ना ९६९)

वास्तव में प्रभु-हुक्म को जो गुरु-कृपा से बूझ लेते हैं तब अहं की बात ही खत्म हो जाती है। जपु जी साहिब में श्री गुरु नानक देव जी पावन फरमान करते हैं :

हुकमै अंदरि सभु को बाहरि हुकम न कोइ ॥
नानक हुकमै जे बुझै त हउमै कहै न कोइ ॥
(पन्ना १)

खबरनामा

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी किसानों के संघर्ष में उनकी हर संभव मदद करेगी : भाई लौंगोवाल

श्री अमृतसर : २७ सितंबर : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान भाई गोबिंद सिंघ लौंगोवाल ने एलान किया है कि किसानों द्वारा आरंभ किए गए संघर्ष में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी उनकी हर संभव मदद करेगी। भाई लौंगोवाल ने कहा कि भारत सरकार द्वारा पास किए गए किसान विरोधी बिलों से किसानों में भारी आक्रोश की भावना बनी हुई है। इस संघर्ष के दौरान शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी हर स्तर पर किसानों के साथ है। उन्होंने कहा कि २५ सितम्बर को किसानों की तरफ से एलाने गए पंजाब बंद के समय शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के कार्यालय बंद रखे गए थे। उन्होंने बताया कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रबंध अधीनस्थ सभी गुरुद्वारा साहिबान से किसानों द्वारा लगाए धरनों में लंगर भेजा जायेगा। उन्होंने कहा कि यह लड़ाई अकेले किसानों की नहीं है, बल्कि हर वर्ग की है। किसान देश की रीढ़ की हड्डी है और देश का हर बाशिन्दा अपरोक्ष-परोक्ष ढंग से किसानी के साथ जुड़ा हुआ है। यदि देश की किसानी ही बरबाद कर दी गई तो देश का अवनति की तरफ जाना तय है। उन्होंने कहा कि भारत सरकार की तरफ से पारित किसान विरोधी काले बिलों से पंजाब को सबसे ज्यादा नुकसान होगा, क्योंकि पंजाब मुख्य तौर पर खेती-अधारित राज्य है। इस संकटमयी समय में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा किसानों का हर स्तर पर साथ दिया जायेगा।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का ९ अरब ८१ करोड़ ९४ लाख ८० हज़ार ५०० रुपए का सालाना बजट पास

श्री अमृतसर : २८ सितंबर : श्री गुरु ग्रंथ साहिब की पावन हजूरी, पांच सिंघ साहिबान की उपस्थिति तथा शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान भाई गोबिंद सिंघ लौंगोवाल की अध्यक्षता में हुए जनरल इजलास के दौरान शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का साल २०२०- २१ का ९ अरब ८१ करोड़ ९४ लाख ८० हज़ार ५०० रुपए का सालाना बजट जयकारों की गूँज में पास किया गया। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के महासचिव स. हरजिंदर सिंघ (धामी) द्वारा पेश किये गए बजट को उपस्थित सदस्यों ने जयकारे बुला कर प्रवानगी दी। बजट में जनरल बोर्ड फंड के लिए ५७ करोड़ रुपए, ट्रस्ट फंड के लिए ३७ करोड़ ६१ लाख रुपए, शिक्षा फंड के लिए २८ करोड़ ४४ लाख रुपए, धर्म प्रचार कमेटी के लिए ५८ करोड़ रुपए, प्रिंटिंग प्रेसों के लिए ८ करोड़ २ लाख रुपए, शैक्षणिक अदारों के लिए २

अरब १५ करोड़ रुपए, डायरेक्टोरेट ऑफ एजुकेशन के लिए ८७ लाख ८० हज़ार ५०० रुपए, गुरुद्वारा साहिबान सैक्शन ८५ के लिए ५ अरब ०७ करोड़ रुपए रखे गए हैं। वर्णनीय है कि कोरोना महामारी के प्रभाव के कारण शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का इस बार का बजट पिछले साल की अपेक्षा १८. ५१ प्रतिशत कम रहा। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की तरफ से बजट इजलास हर साल मार्च महीने में आयोजित किया जाता है, परंतु इस बार कोरोना महामारी के कारण यह संभव नहीं हो सका। इसके चलते कार्यपालिका द्वारा दो बार तीन-तीन माह के खर्चे को प्रवानगी दी जाती रही।

बजट इजलास के बाद प्रेस-वार्ता में बातचीत के दौरान शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान भाई गोबिंद सिंघ लौंगोवाल ने बजट की प्रशंसा करते हुए कहा कि बेशक बजट कोरोना महामारी के कारण प्रभावित हुआ है, परंतु फिर भी बजट संगत की भावनाओं की तर्जमानी करता है। इसमें हर पक्ष को तवज्जो दी गई है। आ रही शताब्दियां, अमृतधारी बच्चों, सिकलीगर और वणजारे सिक्खों, गुरसिक्ख खिलाड़ियों तथा प्रतियोगिताओं में बेहतर कारगुज़ारी दिखाने वाले सिक्ख नौजवानों के लिए बजट में विशेष राशि रखी गई है। वातावरण की शुद्धता, प्राकृतिक आपदा, खेती को प्रफुल्लित करना बजट का मुख्य एजेंडा है। उन्होंने बताया कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की तरफ से एक नयी पहल करते हुए तख़्त श्री दमदमा साहिब में स्थित माता साहिब कौर गर्ल्स कॉलेज में २०० सिक्ख लड़कियों को नि:शुल्क शिक्षा देने का प्रबंध किया गया है। बजट में इस कार्य के लिए विशेष राशि रखी गई है। इसके अंतर्गत दाख़िल की जाने वाली लड़कियों में से १० प्रतिशत कोटा रागी, ढाडी, प्रचारक, ग्रंथी तथा अखंड पाठी सिंघों की बच्चियों के लिए रखा गया है। इसके अलावा ५ प्रतिशत कोटा आर्थिक रूप में कमज़ोर गुरसिक्ख परिवार की लड़कियों के लिए होगा।

उन्होंने बताया कि आ रही शताब्दियों के लिए बजट में ३ करोड़ ४५ लाख ७० हज़ार रुपए रखे गए हैं। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का स्थापना दिवस और श्री गुरु तेग़ बहादर साहिब का ४०० वर्षीय प्रकाश दिवस मनाने के लिए योजनाएं तैयार की गई हैं। इसी तरह गुरसिक्ख खिलाड़ियों और खेलों के लिए ९० लाख रुपए तथा प्राकृतिक आपदा प्रबंधन के लिए ९६ लाख रुपए रखे गए हैं। सिकलीगर-वणजारे सिक्खों और पंजाब से बाहर के गुरुद्वारों, स्कूलों आदि के लिए ५ करोड़ ३० लाख रुपए, आर्थिक पक्ष से कमज़ोर लोगों एवं गरीब बच्चों की पढ़ाई के लिए १ करोड़ ५० लाख रुपए का प्रबंध किया गया है। इसके अलावा सिक्ख इतिहास की खोज, लेखन और छपाई आदि के लिए ५ लाख ७० हज़ार रुपए रखे हैं। अमृतधारी विद्यार्थियों की फ़ीस के लिए भी विशेष राशि का प्रबंध किया गया है। उन्होंने बताया कि मीरी पीरी मेडिकल कॉलेज शाहबाद मारकंडा और श्री गुरु ग्रंथ साहिब मिशन अम्बाला के लिए १४ करोड़ २० लाख रुपए बजट में रखे गए हैं।

सच्चखंड श्री हरिमंदर साहिब के ग्रंथी ज्ञानी सुखजिंदर सिंघ के निधन पर सिक्ख जगत में शोक की लहर

श्री अमृतसर : ७ अक्तूबर : सचखंड श्री हरिमंदर साहिब के ग्रंथी सिंघ साहिब ज्ञानी सुखजिंदर सिंघ, जो कि स्वास्थ्य ठीक न होने के कारण अस्पताल में दाखिल थे, के निधन के समाचार से सिक्ख संगत में शोक की लहर फैल गई। सिंघ साहिब ज्ञानी सुखजिंदर सिंघ के निधन पर सिक्ख पंथ की कई शख़्सियतों ने गहरे दुख का इज़हार किया। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान भाई गोबिंद सिंघ लौंगोवाल ने सिंघ साहिब ज्ञानी सुखजिंदर सिंघ के गृह में पहुंच कर उनके पारिवारिक सदस्यों के साथ शोक व्यक्त किया। भाई लौंगोवाल ने कहा कि ज्ञानी सुखजिंदर सिंघ का आकस्मिक चले जाना सिक्ख जगत में न पूरा होने वाला घाटा है।

इस दौरान सचखंड श्री हरिमंदर साहिब के मुख्य ग्रंथी सिंघ साहिब ज्ञानी जगतार सिंघ, श्री अकाल तख़्त साहिब के जत्थेदार ज्ञानी हरप्रीत सिंघ और तख़्त श्री केसगढ़ साहिब के जत्थेदार ज्ञानी रघबीर सिंघ ने भी ज्ञानी सुखजिंदर सिंघ के परिवार के साथ शोक व्यक्त किया। उपरोक्त के अलावा श्री दरबार साहिब के अपर हैंड ग्रंथी ज्ञानी जगतार सिंघ लुधियाना, सिंघ साहिब ज्ञानी मान सिंघ सहित सभी सिंघ साहिबान, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के पूर्व वरिष्ठ उपाध्यक्ष भाई रजिंदर सिंघ महिता, कनिष्ठ उपाध्यक्ष भाई गुरबख़श सिंघ ख़ालसा, महासचिव स. हरजिंदर सिंघ (धामी), कार्यपालिका सदस्य स. जगसीर सिंघ मांगेआणा, स. मंगविंदर सिंघ खापड़खेड़ी, सदस्य भाई मनजीत सिंघ आदि भी शोक व्यक्त करने वालों में शामिल थे।

बाबा बीर सिंघ नौरंगाबादी और अन्य सिक्ख जरनैलों की शहादत से सम्बन्धित श्री अकाल तख़्त साहिब पर पश्चाताप समागम

श्री अमृतसर : १० अक्तूबर : महाराजा रणजीत सिंघ के निधन के बाद डोगरों के बहकावे में आकर गुमराह हुए सिक्ख सैनिकों द्वारा बाबा बीर सिंघ नौरंगाबादी तथा अन्य सिक्ख जरनैलों को शहीद किये जाने के मामले में पश्चाताप के रूप में श्री अकाल तख़्त साहिब पर आरंभ हुए श्री अखंड पाठ साहिब के भोग की अरदास हुई। इस अवसर पर श्री अकाल तख़्त साहिब के जत्थेदार ज्ञानी हरप्रीत सिंघ, तख़्त श्री केसगढ़ साहिब के जत्थेदार ज्ञानी रघबीर सिंघ, पूर्व जत्थेदार भाई जसबीर सिंघ रोडे तथा बाबा जगजीत सिंघ हरखोवाल आदि ने अपने विचार प्रकट किये। समागम के दौरान शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान भाई गोबिंद सिंघ लौंगोवाल भी उपस्थित थे।

समागम के दौरान संबोधित करते हुए श्री अकाल तख़्त साहिब के जत्थेदार ज्ञानी हरप्रीत सिंघ ने कहा कि सिक्खों को हमेशा ही विरोधी शक्तियों की चालों का शिकार होना पड़ा है। महाराजा रणजीत सिंघ के निधन के बाद अंग्रेज़ों ने सिक्ख राज को ख़त्म करने के लिए डोगरों को अपनी कठपुतली बनाया,

जिसका परिणाम यह निकला कि सिक्ख सैनिकों के हाथों ही बाबा बीर सिंघ नौरंगाबादी सहित कई सिक्ख जरनैलों को शहादत का जाम पीना पड़ा। उन्होंने कहा कि आज भी ऐसी कई सिक्ख विरोधी शक्तियां सिक्खों को आपस में लड़ा रही हैं। सिक्खों के साथ हो रही धक्केशाही का कारण हमारा एकजुट न होना है। उन्होंने वर्तमान समय में सिक्खों को भाई-मार जंग से बचने और एकजुट होने की अपील की। ज्ञानी हरप्रीत सिंघ ने जम्मू-कश्मीर और राजस्थान में पंजाबी भाषा को अनदेखा किये जाने पर भी सवाल उठाया।

इस अवसर पर तख़्त श्री केसगढ़ साहिब के जत्थेदार ज्ञानी रघबीर सिंघ ने डोगरों द्वारा १७६ वर्ष पूर्व किये गए कत्लेआम के इतिहास का वर्णन करते हुए सिक्ख कौम को वर्तमान समय में सचेत रूप से सिक्खी की चढ़दी कला के लिए क्रियाशील होने की प्रेरणा की।

इस अवसर पर पंथ की कई जानी-मानी धार्मिक हस्तियों के अलावा भारी मात्रा में संगत उपस्थित थी।

पश्चिमी बंगाल में सिक्ख की दसतार और केशों की बेअदबी करना निंदनीय कृत्य : भाई लौंगोवाल

श्री अमृतसर : १० अक्तूबर : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान भाई गोबिंद सिंघ लौंगोवाल ने पश्चिमी बंगाल में पुलिस द्वारा एक सिक्ख सुरक्षा कर्मी की दसतार उतारने और केशों की बेअदबी करने की सख़्त शब्दों में निंदा की है। भाई लौंगोवाल ने कहा कि दसतार सिक्ख का गौरव है और इसी दसतार ने ही देश के सभ्याचार को बचाने में बड़ी भूमिका निभाई है। देश की आज़ादी में ८० प्रतिशत से अधिक योगदान सिक्खों ने दिया। आश्चर्य की बात है कि अब सिक्खों की दसतार को ही निशाना बनाया जा रहा है। पश्चिमी बंगाल में सिक्ख सुरक्षा कर्मी के केशों और दसतार की बेअदबी ने पूरे सिक्ख जगत में आक्रोश पैदा किया है। भाई लौंगोवाल ने कहा कि भारत सरकार को सिक्खों की सुरक्षा के लिए कई बार पत्र भी लिखे जा चुके हैं। इसके अलावा शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के जनरल इजलास में इस संबंधी पारित प्रस्ताव भी केंद्र सरकार के पास भेजे जाते हैं। उन्होंने कहा कि किसी सिक्ख की दसतार की तौहीन पूरे देश की तौहीन है। उन्होंने कहा कि देश के प्रधान मंत्री को चाहिए कि ऐसे मामलों से सम्बन्धित सख़्त हिदायतें जारी कर देश भर में सिक्खों की सुरक्षा को संजीदगी से लेते हुए उनके ककारों का सम्मान बरकरार रखने के लिए ठोस कदम उठाए जाएं। भाई लौंगोवाल ने पश्चिमी बंगाल की घटना के दोषियों के विरुद्ध सख़्त कार्यवाही की माँग की।